RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल–९, अंक–१२, पृष्ठ–४०, मूल्य–₹ ३०, दिनांक : ०१ मई–२०२४
Year-9, Issue-12, Page-40, Price : ₹ 30, Date : 01 May-2024

CRIME FORCE

.... *Always Alert, To Stop The Crime*

सत्यमेव जयते

अब की बार किसकी सरकार?

ओबीसी वोटर्स निर्णायक साबित होंगे !

सावधान! नदियों और समंदर के लिए हानिकर्ता धुम्रपान

THE
VIBE
@Mota Mava, Rajkot
4 BHK+
3350 sqft Carpet Area
Project Design
ZEROISM
Ar. SEHUL PATEL
Ar. VIDHI PATEL
I.D. POONAM SONI
Project by
URBAN
INFRASTRUCTURE
Site
+91 7575 887 886
+91 99241 38990
Sehul Patel
+91 95375 53557
Jeet Saparia
+91 96878 18001
Harsh Viroja

RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल-९, अंक-१२ , पृष्ठ-४० मूल्य-₹३०
दिनांक : ०१ मई-२०२४
"Crime Force" (Monthly)
Volume-9, Issue-12, Price-₹30
1st May-2024, Page: 40

मालिक-प्रकाशक-मुद्रकश्री
रणजीतसिंह जादव
Mob. : 098250 63283

तंत्रीश्री
विजय साणथरा
Mob. : 075750 55333

एडमीन चीफ
विपुल ब्रह्मभट्ट
Mob. : 098250 10288

निवासी तंत्रीश्री
हसु कपासी
Mob. : 098792 27272

सहतंत्रीश्री
सतीष सोलंकी
Mob. : 092746 76760

सालाना लवाजम
भारत में : ₹ ३६०/-
विदेश में : ₹ २५००/-

तंत्री स्थानसे...

चुनाव में वाणी विलास कितना जायज?

अब जब २०२४ लोक सभा चुनाव का माहौल है। सभी राजकीय दल अपने-अपने दल को ज्यादा से ज्यादा बैठको जिताने के लिए एडी चोटी का जोर लगा रहे हैं।

कईबार सभाओं में समाचारों और प्रजा जनों में खुद को हिरो समजने वाले नेताओं कोई एक समाज के वोट हांसिल करने के लिए अन्य समाज को चोट लगे ऐसा बफाट करते हैं। सत्ता के अहंकार में सहज मे भूल से भी किसी भी समाज, संगठन, पक्ष की गरिमा को चोट लगे ऐसी वाणी विलास तो करनी ही नहीं चाहिए।

हमारा देश धर्म सहिष्णु देश हैं। यहां विविध प्रकार के संप्रदाय लोग बसते हैं और सभी संप्रदाय को अपने-अपने धर्म को अनुसरने की स्वतंत्रता भी मिली है। इसलिए एक संप्रदाय के वोट हांसिल करने के लिए दुसरे संप्रदाय को नीचा दिखाना गलत और अक्षम्य है। कई बार नेताओ जोश में होश खो बैठते हैं और ऐसे बारे में अनाप शनाप बोल देते हैं।

इस बारे में चुनाव आयोग में शिकायत करने से वाणी विलास करने वाले नेताओं पर कदम उठाया जाता है। लेकिन तब तक समाज में इसका बुरा असर होना चालू हो गया होता है।

इसलिए हर एक राजकीय दलों के नेताओं को यह बात खासतौर से समजनी चाहिए और ऐसी वाणी विलास से दूर रहना चाहिए।

मुख्य कार्यालय
राज कोम्प्लेक्ष, स्टार प्लाझा के सामने,
फुलछाब चौक, राजकोट - ३६० ००१

Website : www.crimeforce.in
E-mail: crimeforce9@gmail.com

London (U.K.) Bureau Office
NISHANT K. JANI
Mo. +44 7999470980
43 Bowrons Ave, Wembley, HA0 4QS London (U.K.)

Maharashtra Bureau Office
Chetan V. Solanki
Mo. +096642 78700
Hrishikesh M. Borse
Mo.+09137131739
Frist Floor, Dhan Mension, Opera House, Mumbai-400002

Mumbai - Bureau Office
Akashbhai P. Shah
Mo.+096196 70007
Arham Group
Office No.24, 1st Floor, 110-Kakakuwa Bldg., 3rd Bhoiwada Corner, Bhuleshwar, Mumbai-400002

Surat - Bureau Office
Ramjibhai N. Panseriya
Mo. 97125 74032
Vinod M. Lavri
Mo. 9825112244
Plot No. 1 Amul Society Near Shreeram Marbal bhatar, Surat-394510

Baroda - Bureau Office
Yagnesh Thakkar
Mo. 099255 55400
Shailesh Thakkar
Mo. 063548 60273
Think Overseas
301 Annapurna Complex, Opp. Makarpura Police Station, B/s Aangan Tower, Manjalpur, Vadodara-390011

Ahmedabad - Bureau Office
Hitesh P. Prajapati
Mo. +084600 03121
Parth P. Shah
Mo.+097269 06767
328 Sangath Mall, Opp. Vishwakarma Engg. Collage, Motera, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005.

मुद्रण स्थान : श्री हरि ओफसेट, आरती अेस्टेट, ढेबर रोड (साउथ), राजकोट-३६०००२

CRIME FORCE HELPLINE No. : 092746 76760

CRIME FORCE

सत्यमेव जयते

अनुक्रमणिका...

राजकीय	05
ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी	07
ईन्टरनेशनल क्राईम स्टोरी	12
नेशनल क्राईम स्टोरी	14
साईबर क्राईम	16
इतिहास के पन्नो से...	23
टेक्नोट्रेन्ड	28
रेड अेलर्ट	30
स्वास्थ्य	32
मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें	34

अब की बार किसकी सरकार?

ओबीसी वोटर्स निर्णायक साबित होंगे

देश में २०२४ का लोकसभा चुनाव ऐतिहासिक बनने वाला है । इस चुनाव की रणभेरी बज चुकी है । थोड़े समय पहले ही चुनाव आयोग द्वारा देश में सात चरणों में मतदान होने का ऐलान किया गया था । पहले चरण में १९ अप्रैल को मतदान होने वाला है । देश के सभी राजकीय दलों ने इस बारे में अपनी अपनी रणनीति बना ली है ।

देश में पहले चरण में १९ अप्रैल को, दूसरे चरण में २४ अप्रेल को, तीसरे चरण में ७ मई को, चौथे चरणमें १३ मई को, पांचवे चरण में २० मई को, छट्ठे चरण में २५ मई को, और सातवें चरण में १ जून को मतदान होनेवाला है । ४ जून को नतीजे आयेगें । ७ चरणो में से २ चरणो का चुनाव हो चुका है और इसमें सभी राजकीय दल को लगता है की अपना पलडा भारी है ।

यह १८वीं लोकसभा का चुनाव पूर्ण स्वरूप से बहुमत वाला होगा कि नहीं उसका दारोमदार ओबीसी वोटर की

राजकीय

◆ रणजीतसिंह जादव ◆

वोटिंग पैटर्न से तय होगा । पिछले ७ लोकसभा चुनाव के दौरान ओबीसी मतदाता ओ द्वारा गठबंधन या पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनाने में सबसे बड़ी भूमिका रही है । इस चुनाव में भी यही ट्रेंड रहने वाला है ऐसा माना जा रहा है । इसलिए ही एनडीए और इंडिया गठबंधन दोनों का मुख्य लक्ष्य ओबीसी समूह को अपनी ओर खींचने का है ।

सीएसडीएस लोक नीति के आंकड़े इसका सबूत देते है । अगर भाजपा और कांग्रेस को ३०% से कम ओबीसी वोट मिलते हैं तो फिर गठबंधन की सरकार बनने

का संभव है। जब ३०% से ज्यादा ओबीसी वोट पाने वाली पार्टी को केंद्र में स्पष्ट बहुमत मिलता है। २०१९ में भाजपा को ४४ %ओबीसी वोट मिले थे और उसमें ३०३ बैठके जीती थी। २०१४ में भाजपा को ३४ %ओबीसी वोट मिले थे और ३० साल बाद केंद्र में कोई भी राजकीय दल के तौर पर भाजपा ने पूर्ण बहुमत (२८२ बैठक) हासिल किया था। १९९६ में भाजपा को १९% और कांग्रेस को २५%, १९९८ में कांग्रेस को २१% और भाजपा को २६ %ओबीसी मत मिले थे, १९९९ में कांग्रेस को २५ % और भाजपा को २३%, २००४ में कांग्रेस को २४% और भाजपा को २३%, जबकि २००९ में कांग्रेस को २४% और भाजपा को २२% ओबीसी वोट मिले थे और केंद्र में गठबंधन सरकार बनी थी। राजकीय विसारदों का मानना है कि स्थानीय और क्षेत्रीय पार्टीओ को पिछले ६ चुनाव में सबसे ज्यादा ओबीसी वोट मिले थे, इसी वजह से पिछली पांच सरकारों में क्षेत्रीय पार्टियों का दबदबा रहा था। जाति जनगणना, मराठाओं को ओबीसी अमानत, उच्च पदों पर ओबीसी की साझेदारी और भाजपा को ओबीसी विरोधी दिखाने की विपक्ष की रणनीति महत्वपूर्ण है। क्योंकि उसको लगता है कि इसी वजह

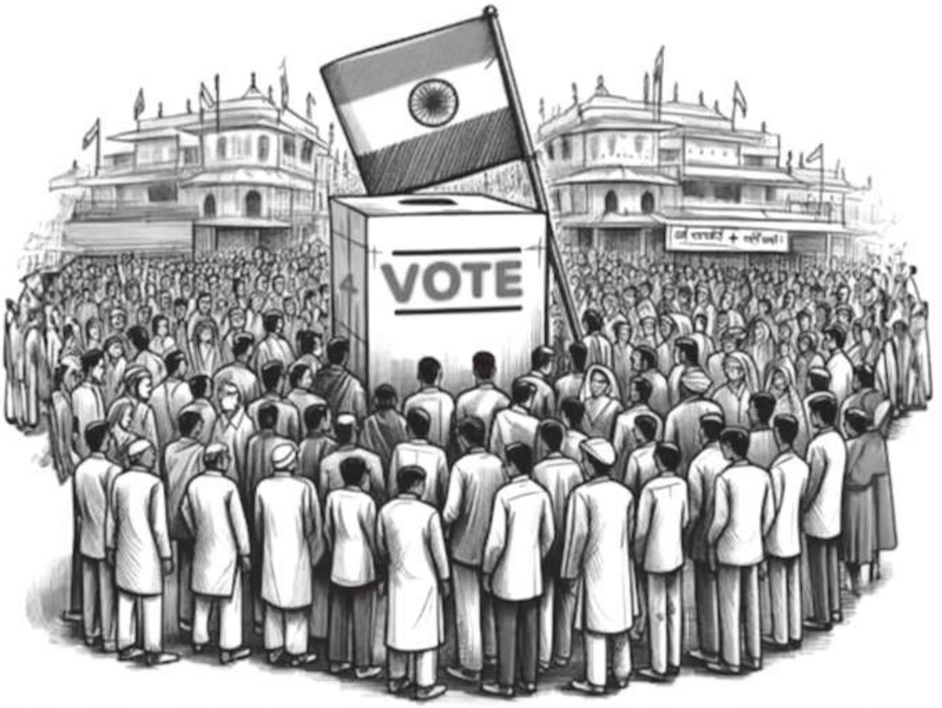

से वह भाजपा को मिलने वाले ओबीसी मत को तोड़ सकेंगे। उस के सामने भाजपा ने विश्वकर्मा योजना, चुनाव में ओबीसी उम्मीदवारों को ज्यादा टिकट देना, ओबीसी समाज जनसंपर्क अभियान और पीएम खुद को ओबीसी समाज से आते हैं ऐसा बताने के लिए भी एक रणनीति बनाई है। भाजपा कोई भी संजोगों में ओबीसी समुदाय के वोट शेर में ३०% से ज्यादा वोट प्राप्त करने की योजना पर काम कर रही है। मोदी सरकार का मानना है कि उसकी सरकार ने जो पिछले १० सालों में काम किया है और भ्रष्टाचार और अपराधो विरुद्ध अभियान चलाया है और अपनी सरकार की भ्रष्टाचार से मुक्त छवि से देश के लोगों उसको जरूर से पूर्ण बहुमत से जिताएंगे और फिर से केंद्र में एनडीए की सरकार बनेगी।

एक बात तो तो है कि राम मंदिर का निर्माण, कश्मीर से ३७० की धारा नाबूदी, मुस्लिम महिलाओं की उन्नति के लिए ट्रिपल तलाक के कानून को रद्द करना, देश के छोटे से छोटे आम आदमी तक (चाहे वह कोई भी समुदाय से हो) रोटी, मकान और स्वास्थ्य की सुविधा पहुंचाने का जो काम मोदी सरकार ने किया है उसकी नोंद्ध भी आम आदमी अवश्य लेगा। लेकिन आखिरकार मतदाताओं के मन में क्या चल रहा है, वह क्या चाहता है वो तो उसको ही मालूम होगा। लेकिन यह २०२४ के लोकसभा चुनाव सभी राजकीय दलों की कसौटी लेने वाला होगा ये भी निश्चित है। अब हम इंतजार करते हैं.... ४ जून का।

विश्व का खतरनाक कोलंबियाई माफिया

पाब्लो एमिलियो एस्कोबार गैवीरियो

दोस्तों पिछले अंक में हमने खूंखार अमेरिकन माफिया डॉन अल केपोन के बारे में बताया था। आज हम बात करेंगे ऐसे ही एक खतरनाक कोलंबियाई माफिया पाब्लो एमिलियो एस्कोबार गैविरिया की।

पाब्लो एस्कोबार का जन्म दिनांक १ दिसम्बर, १९४९ को एक ग्रामीण किसान, एबेल डी जीसस एस्कोबार के घर हुआ था। पाब्लो की मां हैमिल्दा गैविरिया एक प्राइमरी स्कूल शिक्षिका थी। उनके माता पिता के ६ संतानों थे। पाब्लो परिवार के साथ एक ऐसे घर में रहता था जहां पानी की सुविधा थी लेकिन बिजली नहीं थी। पाब्लो को एक दिन इसलिए स्कूल से निकाल दिया था क्योंकि उसके पास पैरो मे पहन ने के लिए जूते नहीं थे। पाब्लो ने यूनिवर्सीढाद डी एंटियोकियां में राजनीति विज्ञान का अध्ययन किया। लेकीन उसके पास आवश्यक राशि नहीं होने से बीच में ही मजबूरन पढ़ाई छोड़नी पड़ी। वही समय से उसने कब्र के पत्थरों को चुराकर और उन्हे तस्करो के हाथों बेचकर कथित तौर पर अपने अपराधिक करियर की शुरुआत की।

समय बीतते पाब्लो एक चालबाज के रूप में आगे बढ़ता चला और उसने पैसे कमाने के लिए सब कुछ करना शुरू कर दिया, जो वह कर सकता था, अपने गिरोह के साथ छोटे छोटे घोटाले करने से लेकर वर्जित सिगरेटो और जाली लॉटरी टिकटों को बेचने तक। अब उसने बैंक से बाहर आते हुए लोगों से नकदी भी लुंटना शुरु कर दिया उस समय वो केवल २० साल का था और एक संपूर्ण कार चोर बन गया था।

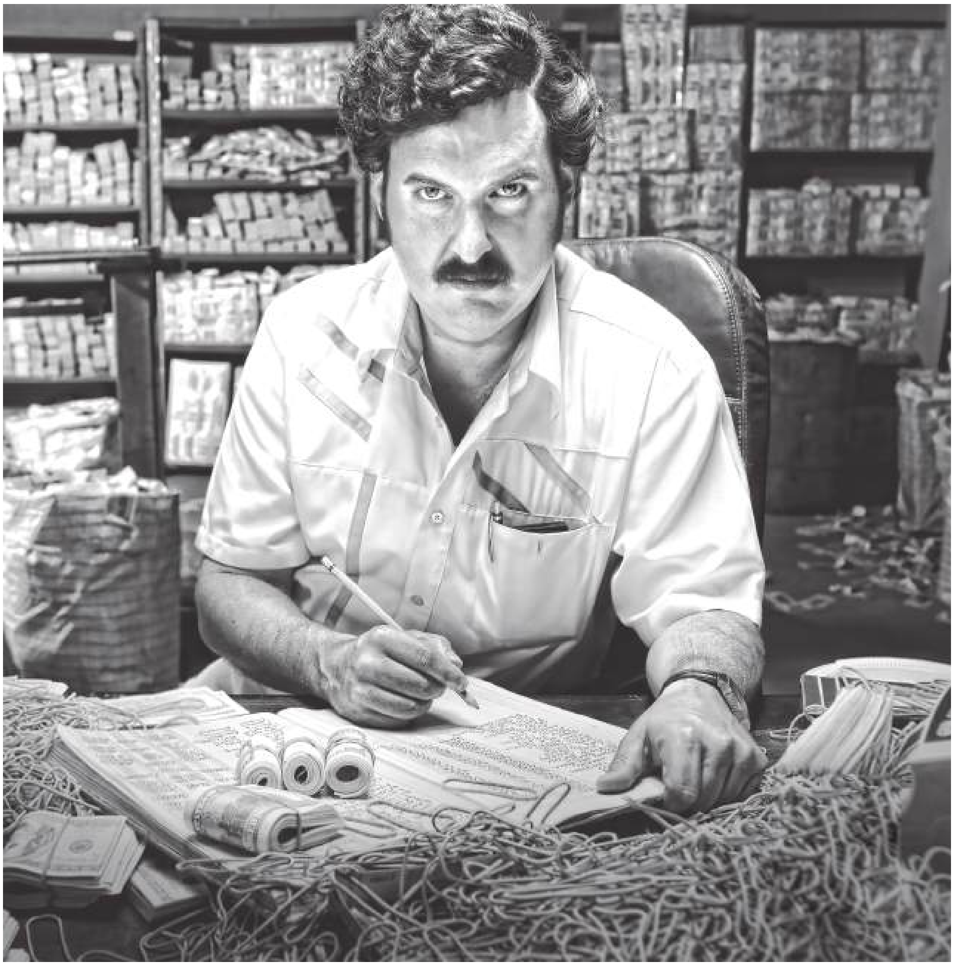

१९७० के दशक के आरंभ में वो एक चोर और एक अंगरक्षक था। नशीली दवाओं के व्यापार में आने से पहले उसने एक मेडेलिन एक्जीक्यूटिव के अपहरण और फिरौती से तत्कालीन एक लाख डॉलर जुटा लिया था। सफलता की सीढियां चढ़ते हुए उसका अगला कदम था बहु करोड़पति एवं प्रतिबंधित तस्कर अलवारो प्रेटो के लिए काम करते हुए एक करोड़पति बनना।

ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी

◆ हसु कपासी–अहमदाबाद ◆

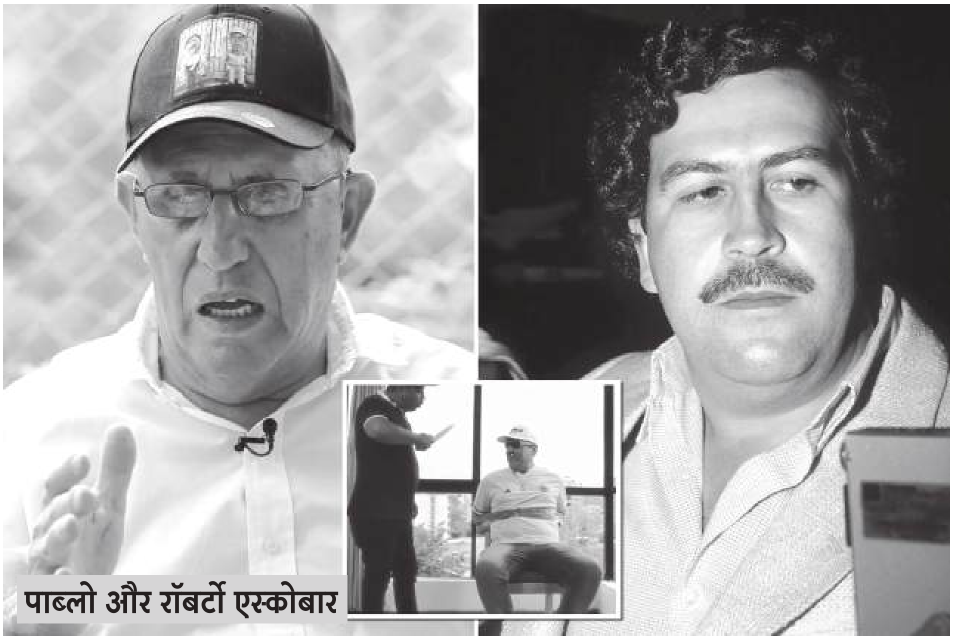

पाब्लो और रॉबर्टो एस्कोबार

अपने समर्पण और छल के जरिए पाब्लो उस समय तक २२ वर्ष की उम्र में ही एक करोड़पति बन गया था।

२६ वर्ष की उम्र में मार्च १९७६ में पाब्लो ने मारिया विक्टोरिया से शादी की थी तब मारिया की उम्र १५ साल की थी पाब्लो और मारिया को दो बच्चे थे, जुआन पाब्लो और मैनुएला।

पाब्लो के भाई, रॉबर्टो एस्कोबार द्वारा प्रकाशित किया गया पुस्तक ''द अकाउंटेंट स्टोरी'' में यह बताया गया है कि किस प्रकार से पाब्लो गरीबी और गुमनामी की स्थिति से उठकर दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक बन गया था। इसलिए तार्किक द्रष्टिकोण से विश्व इतिहास में सबसे बड़ा और सबसे सफल अपराधिक संस्थान, मेडेलिन ड्रग कार्टेल कई बार १ दिन में १५ टन कोकीन की तस्करी करता था। जिसकी कीमत संयुक्त राज्य अमेरिका के अंदर आधे बिलियन डॉलर से भी अधिक थी। रॉबर्टो के अनुसार उसकी और उसके भाई के कारोबार में सिर्फ नकदी की गड्डियों को बांधने के लिए १००० डोलर का रबर बैंड प्रति सप्ताह खरीदा जाता था। क्योंकि उसके पास इतना अधिक काला धन था की वे इसे बैंक में जमा नहीं कर सकते थे। फिर उन्होंने नकदी की गड्डियों को अपने गोदाम में जमा कर दिया, जीनमें से प्रतिवर्ष १० परसेंटेज रद्दी के रूप में नष्ट होता रहा क्योंकि वहां रात को चूहे बहुत आते थे। जो डॉलर की गड्डियों को कुतर देते थे।

१९७५ में एस्कोबर ने अपने कोकीन के कारोबार को इतना बढ़ाया कि उसने संयुक्त राज्य अमेरिका में एक सौदे के लिए स्वयं एक विमान उड़ाया काम, खत्म करके उसमें इस विमान को तोड़ दिया और इसे हैसियेंढा नेपोलस में अपने एक पशु फार्म के दरवाजे पर लटका दिया। उसकी प्रतिष्ठा तब और बढ़ गई जब १९७५ में जाने माने मेडेलिन डीलर, फैबियो रेस्ट्रेपो की हत्या जाहिर में एस्कोबार ने की थी। बाद में रेस्ट्रेपो के सभी आदमियों को सूचित किया गया कि वो अब पाब्लो एस्कोबार के लिए काम करेंगे। मई १९७६ में एस्कोबार और उसके कई आदमियों को गिरफ्तार किया गया था। इक्वाडोर से मेडेलिन लौटने के बाद उनके पास से ३९ पाउंड सफेद पेस्ट पाया गया। आरंभ में पाब्लो ने मेडेलिन के उस न्यायाधीशों को रिश्वत देने की कोशिश की, जो उसके विरुद्ध कार्यवाही कर रहे थे। इसके बजाए कई महीनो के कानूनी तकरार के बाद पाब्लो ने गिरफ्तार करने वाले दो अफसरों को मार डाला था और तब इस मामले को बंद किया गया। उस समय से उसने तय किया कि अफसर को पहले पहले रिश्वत देना अगर न माने तो उसकी हत्या कर देना। रॉबर्टो के कहे अनुसार पाब्लो ने इस व्यापार को शुरू इसलिए किया क्योंकि प्रतिबंध इतना खतरनाक हो गया था कि यातायात के लिए भी मुश्किल खड़ी हो गई थी। वह कोकीन से भरे एक ट्रक से शराब और सिगरेट के ४० पेटियों के बनिस्पत कहीं अधिक पैसे कमा सकता था। उस समय कोई भी ड्रग कार्टेल नहीं था और फिर कुछ ड्रग बैरन थे इसलिए वहां हर किसी के लिए काफी मात्रा में व्यापार था। पेरू में उन्होंने कोकीन पेस्ट खरीदा जिसे उन्होंने मेडेलीन में एक दो मंजिला मकान में बनी प्रयोगशाला में परिष्कृत किया। अपनी पहली यात्रा के दौरान ३० पाउंड की एक मामूली कीमत की पेस्ट खरीदी जो उसके अपने साम्राज्य निर्माण की दिशा में पहला कदम था। सबसे पहले उसने विमान के पुराने टायरो में कोकीन की तस्करी की और तब एक पायलट प्रति उड़ान अधिक से अधिक ५

लाख पाउंड कमा सकता था जो इस बात पर निर्भर करता था कि वह कितने किलो की तस्करी कर सकता है ।

जल्द ही संयुक्त राज्य अमेरिका में कोकीन की मांग आसमान छूने लगी और पाब्लो ने दक्षिण फ्लोरीडा, कैलिफोर्निया और यूएसए के दूसरे हिस्सों में तस्करी के अधिक से अधिक शिपमेंटो, रास्ते और वितरण प्रणाली की व्यवस्था कर ली उसने और कार्लोस लेडर ने साथ मिलकर बहामास में एक नया द्वितीय पारगमन शिपमेंट पॉइंट विकसित किया जिसे नॉरमेंस केथ कहते थे । कार्लोस और रॉबर्ट वास्को ने द्वीप की अधिकांश जमीन खरीद ली, जिसमें ३३०० फीट की एक हवाई पट्‌टी, एक बंदरगाह, होटल, मकाने, नौकाएं, विमान और यहां तक की कोकीन को जमा करने के लिए बनाया गया शितालीकृत गोदाम शामिल था । १९७८ से १९८२ तक, इसे मेडेलिन कार्टेल के लिए तस्करी के केंद्रीय मार्ग के रूप में इस्तेमाल किया गया था । (उसके भाई के बातों के अनुसार पाब्लो ने नौरमेंश केथ को नहीं खरीदा था । इसके बजाय यह कार्लोस लेडर का एकमात्र उपक्रम था) । एस्कोबार कई मिलियन डॉलर खर्च कर ७.७ वर्ग मील की जमीन खरीदने में सफल रहा, जीसमें हैसिपेंडा नैपोलस शामिल था । उसने अपने परिवार और संस्थान के लिए एक चिड़ियाघर,एक झील और अन्य उप मार्ग तैयार किये । एक समय यह अनुमान लगाया गया था कि हर महीने जहाज पर ७० से ८० टन कोकीन कोलंबिया से अमेरिका भेजा जाता था । १९८० के दशक के मध्य में अपनी शक्ति के शिखर

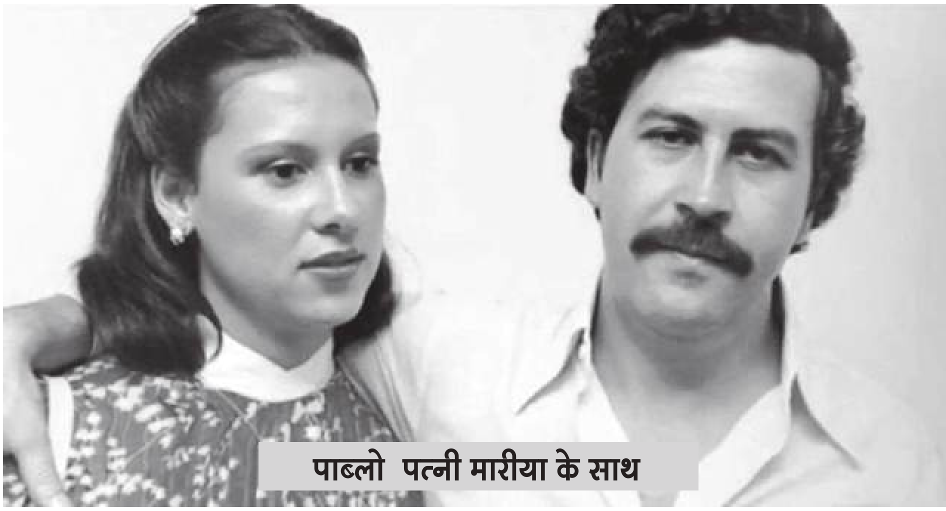

पाब्लो पत्नी मारीया के साथ

पर वह जेट लाइनर्स में प्रति उड़ान ११ टन की तस्करी संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए करता था । पाब्लो द्वारा भेजा गया सबसे बड़ा लोड २३००० किलो था जिसे मछली के वेस्ट के साथ मिलाया गया और नौका द्वारा भेजा गया था । इस बात की पुष्टि उनके भाई द्वारा एसकोबार नामक पुस्तक में की गई । पाब्लो के भाई रॉबर्टो एस्कोबार ने कहा कि विमान का उपयोग करने के अलावा उसने भारी मात्रा में लोड को भेजने के लिए दो छोटे रिमोट नियंत्रित पनडुब्बियों का भी इस्तेमाल किया । वास्तव में इन पनडुब्बियों में आदमी होते थे और यह भी रॉबर्टो के पुस्तक में दर्ज है ।

१९८२ में एस्कोबार को कोलंबिया लिबरल पार्टी के एक अंग कोलंबिया कांग्रेस में प्रतिनिधिमंडल के उप/ वैकल्पिक प्रतिनिधि के रूप में चुना गया । १९८० के दशक के दौरान एस्कोबार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक जाना पहचाना नाम बन गया । क्योंकि उसका नशीली दवा का नेटवर्क कुख्यात हो गया । संयुक्त राज्य अमेरिका, मेक्सिको, पोर्तोरिको और डोमिनिक गणराज्य में प्रवेश करने वाले नशीली दवा का एक बड़ा हिस्सा मेडेलिन कार्टेल द्वारा नियंत्रित होता था । इनमें से अधिकांश कोकीन पैरु और बोलीविया से आता था क्योंकि शुरुआती दौर में कोलंबिया की गुणवत्ता घटिया स्तर की थी । एस्कोबार के उत्पाद कई अन्य देशों, ज्यादातर अमेरिका के आसपास तक पहुंच गए । हालांकि यह कहा जाता है कि उसका नेटवर्क यहां से काफी दूर एशिया तक पहुंच गया था ।

भ्रष्टाचार और धमकी कोलंबिया तंत्र के साथ एस्कोबार की विशेषता थी । कानून, प्रवर्तन और सरकार के निपटने के लिए उसके पास एक प्रभावी और अपरिहार्य नीति थी, जिसे ''प्लाटा ओ प्रोमो''कहा जाता था । (शाब्दिक रूप से सिल्वर या लेड,बोलचाल की भाषा में पैसे लो या गोलियों का सामना करो) इसके परिणाम स्वरुप नागरीको,पुलिसकर्मियों और राज्य के अधिकारियों सहित सेंकड़ों व्यक्तियों की मौत हुई । इस दौरान, एस्कोबार ने अनगिनत सरकारी अफसर, न्यायाधीशों को रिश्वत दी । एस्कोबार कोलंबिया के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार लुईस कार्लोस

रूप में देखा जाता था। इसके बावजूद के कई लोगों विशेष कर गरीब लोगों के लिए वो एक नायक था। सार्वजनिक संबंधों के मामले में वह स्वाभाविक था। उसने कोलंबिया के गरीब लोगों के बीच अपना नाम करने के लिए काम किया। पाब्लो आजीवन खेल प्रशंसक रहा था इसलिए उसको कई फुटबॉल के मैदाने और बहु उपयोगी खेल परिसरों का निर्माण के साथ-साथ कई छोटे लीग फुटबाल टीमों का प्रयोजक होने का श्रेय जाता है।

गौलान जो एक ही चुनाव में भाग लेने वाले उन तीन उम्मीदवारों में से एक थे जिनकी हत्या कर दी गई थी। साथ ही एविएंका फ्लाइट २०३ पर बमबारी और १९८९ में बोगोटा में स्थित डीएस बिल्डिंग को बम से उडाने के लिए भी जिम्मेदार था। कार्टेल डी मेडेलिन अपने प्रारंभिक प्रतिद्वंद्वी कार्टेल डी कैली के साथ इसके अस्तित्व में रहने के घातक नशीली दवाओं के युद्ध में शामिल था। कई बार ये आरोप भी लगाया गया कि एस्कोबार ने १९ अप्रैल आंदोलन के लेफ्ट विंग गुरीकलाओं, जिन्हें M१९ भी कहा जाता है द्वारा १९८५ में कोलंबियाई सुप्रीम कोर्ट पर गोलियों की बौछार का नेतृत्व किया। जिसके परिणाम स्वरूप अदालत के आधे न्यायाधीशों की मौत हो गई थी। इनमें से कुछ दावों को मौजूदा सुप्रीम कोर्ट के तीन न्यायाधीशों के एक सभ्यता आयोग द्वारा २००६ के उत्तरार्ध में जारी एक रिपोर्ट में शामिल किया गया था। उनमें से एक का कहना था कि हमला एस्कोबार को मारने वाले एक पेशेवर हत्यारे, ''पोपिये'' का काम है। घेराबंदी के समय सुप्रीम कोर्ट अमेरिका के साथ कोलंबिया की प्रत्यर्पण संधि की संवैधानिकता का अध्ययन कर रहा था।

१९८७ में फोर्ब्स पत्रिका ने अनुमान लगाया गया था कि एस्कोबार दुनिया का सातवां सबसे अमीर आदमी है, जिसकी व्यक्तिगत संपत्ति १ बिलीयन डॉलर के करीब है, जबकि दुनिया भर के बाजार के ८०% हिस्से पर उसकी मेडेलिन कार्टेलका नियंत्रण है। अधिकांश व्यवसाय में किसी भी कंपनी को फलते फूलते हुए देखने के लिए निवेश पर आय, आईआरओ १००% से अधिक होना पर्याप्त से अधिक है। कुछ अनुमानों के अनुसार, एस्कोबार ने २००००% से भी ज्यादा आर ओ आई अर्जित किया था। सरल भाषा में समझे तो अपने कारोबार में लगाए गए प्रति $१ पर उसने तकरीबन २०० डोलर का रिटर्न प्राप्त किया। कहा जाता है कि पाब्लो एस्कोबार कि प्रतिवर्ष आय का एक बिलियन डॉलर चूहे खा जाते थे। हालांकि एस्कोबार को कोलंबिया सरकार और संयुक्त राज्य के अमेरिका के एक दुश्मन के

एस्कोबार ने मेडेलिन के कई गिरिजाघर का निर्माण किया जिसने उसे स्थानीय रोमन कैथोलिक चर्च के अंदर काफी लोकप्रियता दिलाई। उसने अपनी रॉबिन हुड छवि बनाने के लिए कड़ी मेहनत की थी और गरीबों के लिए उसने कई आवास योजनाएं बनाई थी। गरीबों के बीच उसने धन भी बांटा था। जिसके कारण गरीबों के मन में उसकी लोकप्रियता बढ़ गई। पाब्लो ने गरीबों के लिए यह सब किया तो दूसरी ओर ऐसे लोगों ने एस्कोबार को बहुत मदद की। उसकी पहरेदारी की, अफसर से उनके बारे में जानकारी छुपाई और सुरक्षा के लिए ऐसे लोग हमेशा तैयार रहते थे।

मेडेलिन समुदाय के बीच उसकी लोकप्रिय छवि होने के बावजूद एस्कोबार अपने कारोबारी सहयोगों के बीच एक असुरक्षित,पागल, क्रोधी हत्यारा के रूप में मशहूर था। पाब्लो अपनी वफादारी के प्रति बहुत ही प्रतिबद्ध था खतरनाक से दोस्ती और शक्तिशाली को डराना उसकी फितरत थी। जब उसका गोल्डन पीरियड था तब मेडेलिन और अन्य क्षेत्र के नशीली दवाओं

के तस्कर अपनी कोलंबियाई कोकीन संबंधी आय का २० से ३५% के बीच हिस्सा एस्कोबार को पहुंचाते थे।

राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार लुइस कार्लोस की हत्या के बाद सीजर गैविरिया का प्रशासन एस्कोबार और ड्रग कार्टेल के विरुद्ध हो गया। आखिरकार सरकार ने एस्कोबार के आत्मसमर्पण एवं कम से कम सजा और कैद के दौरान विशेष प्रकार के बर्ताव के लिए उसकी सभी आपराधिक गतिविधियां बंद करने की शर्त पर उसे समझाने के लिए उसके बाद साथ बातचीत की।

एस्कोबार ने स्वयं को बदल दिया फिर उसने अपने स्वयं के आलीशान निजी जेल, ला केटेड्रेल में कैद कर दिया गया। लेकिन एस्कोबार ने अपनी गतिविधियां जेल के अंदर से भी चालू रखी। जब सरकार को पता चला कि एस्कोबार ला केटेड्रेल से अंदर से अपनी आपराधिक गतिविधियां चल रहा है तो उसने २२ जुलाई, १९९२ को एस्कोबार को दूसरे जेल में भेजने की कोशिश की। लेकिन एस्कोबार की पहुंच बहुत बड़ी थी, कुछ अफसर द्वारा उसे यह बात की जानकारी दी गई और पाब्लो को सुरक्षित वहां से निकलने में मदद की।

१९९२ में डेल्टा फोर्स और सेंट्रा स्पाईक के यूनाइटेड ऑपरेटर एस्कोबार की तलाशी अभियान में शामिल हो गए। उन्होंने एस्कोबार को ढूंढने के लिए बनाए गए विशेष कोलंबिया पुलिस टास्कफोर्स जिसे सर्च ब्लॉक कहते है, को प्रशिक्षित किया और उन्हें परामर्श दिया। एस्कोबार के शत्रुओं की संख्या अब तेजी से बढ़ रही थी। जीन में शामिल थे लॉस पेप्स (लॉस पर्स गिदौस पोर पाब्लो एस्कोबार) नामक एक सतर्कता समूह या ''पाब्लो एस्कोबार द्वारा सताए गए लोग''। यह लोस पैप्स ने प्रतिशोध से धधकता एक खूनी अभियान चलाया जिसमें एस्कोबार के ३०० से अधिक साथीदारों और रिश्तेदारों को मार डाला गया और भारी मात्रा में कार्टेल की संपत्तियां नष्ट कर दी।

अब सर्च ब्लॉक के सदस्य और उनके साथ-साथ कोलंबिया और संयुक्त राज्य अमेरिका की खुफिया एजेंसीयां, लोस पैप्स सब लोगों ने साथ मिलकर एस्कोबार की तलाश और उसे सजा दिलाने की पूरी कोशिश की।

एस्कोबार के खिलाफ युद्ध २ दिसंबर, १९९३ में को समाप्त हो गया जब उसने फिर एक बार सर्च ब्लॉक से बचकर भाग निकलने की कोशिश की तब रेडियो ट्रायंगल तकनीक का उपयोग करते हुए एक कोलंबियाई इलेक्ट्रॉनिक निगरानी दल ने पाया कि वह मेडेलिन में मध्यम वर्गीय बैरियो में छुपा हुआ है। अधिकारियों के नजदीक आते ही एस्कोबार और उसके अंगरक्षक, अलवारो डी जीसस एगुडेलो उर्फ अल लिमोन के साथ गोलीबारी शुरू हो गई। वहां से भागने की असफल कोशिश की लेकिन कोलंबियाई राष्ट्रीय पुलिस ने दोनों को गोली मार दी। उसे धड़, पैर और कान पर गोलियां दागी गई। जिसमें सबसे घातक निशाना एस्कोबार के सर पे लगाया। उसके दो भाइयों रोबोट एस्कोबार और फर्नांडो संचेझ अरिलानो समेत परिवार के कई सदस्यों को विश्वास है कि एस्कोबार ने खुद को कान पर गोली मार दी, उसने आत्महत्या कर ली थी और मारा नहीं गया था। क्योंकि उसने बताया कि उनसे बिछड़ने के बाद एस्कोबार बार-बार उसको कहता था कि जब उसको बचने का कोई रास्ता नहीं मिलेगा तो वह अपने आप को कानों पर गोली मार कर खत्म कर देगा लेकिन पुलिस के हाथ नहीं मरेगा।

२६ वर्ष की उम्र में मार्च १९७६ में पाब्लो ने मारिया विक्टोरिया से शादी की थी तब मारिया की उम्र १५ साल की थी पाब्लो और मारिया को दो बच्चे थे, जुआन पाब्लो और मैनुएला।

एस्कोबार ने जो अपनी रॉबिनहुड की छवि बनाई थी,उसका मेडेलिन में स्थाई प्रभाव बहुत था। वहां के कई लोग, विशेष रूप से शहर के अधिकांश गरीब लोग जिन्हें एस्कोबार के जीवित रहते उसके द्वारा सहायता प्राप्त की थी उन्होंने एस्कोबार की मौत पर बहुत विलाप किया। माना जाता है कि एस्कोबार के दोनों संतान बेटा जुआन पाब्लो और बेटी मैनुएला अन्य देश में चले गए।

दिन में क्राइम रिपोर्टर, रात में सीरियल किलर

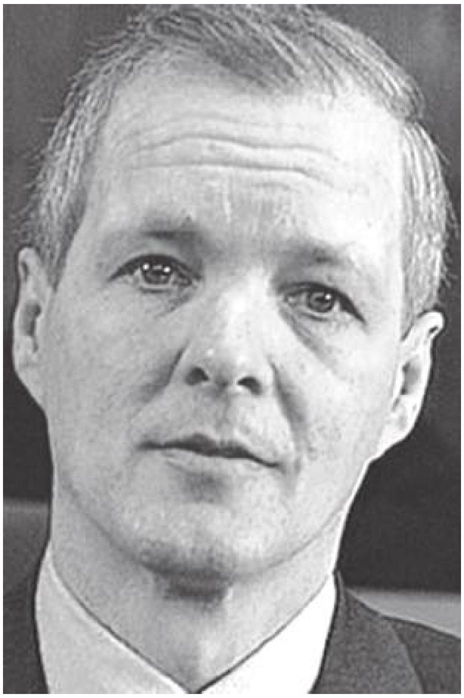

पूरा विश्व आज सभी क्षेत्र में विकास की दौड़ लगा रहा है। विकास की इस दौड़ से अच्छा और बुरा दोनों तरीके का नतीजे सामने आते हैं। पूरे विश्व में आतंकवाद ने अपना पैर जमा लिया है और आतंकवादियों द्वारा विश्व के अलग-अलग देशो में आम बेकसूर आदमियों को निशाना बनाया जाता है। आतंकवादियों का एक ही मकसद होता है, ज्यादा से ज्यादा जानहानि। अफडातफ्डी का माहौल बनाकर उस देश में अराजकता फैला के लोगों के मन में डर पैदा करना। जीस देश में ऐसे आतंकवादी हमला होता है वहां के अर्थतंत्र को भी बड़ा नुकसान होता है। बार-बार ऐसे हमले होने से देश का अर्थ एकदम खोखला हो जाता है।

चलो यह बात तो आतंकवाद की हुई। लेकिन इसके सिवा के गुनाओ में भी वृद्धि हुई है और तस्करी, लूट, बलात्कार, हत्या जैसे गुनाहों में तेज रफ्तार से बढ़ोतरी हुई है। गुनाहों बढ़ने से सहज बात हैं कि गुनहगारों भी बढ़ते जा रहे है। ऐसे गुनहगारों में भी स्पर्धा होती है कि कौन सबसे ज्यादा ताकतवर। ऐसे गुनहगारों में से कौन ज्यादा आम लोगों के मन में डर पैदा करने वाला है ? ऐसी स्पर्धा में खुद को ज्यादा ताकतवर दिखाने के लिए अधम से अधम कार्य को करने से भी पीछहठ नहीं करते।

लेकिन जे ते देश के पुलिस डिपार्टमेंट और सरकारी एजेंसीयां ऐसे गुनहगारों को पकड़ने के लिए और ऐसे गुनाहों को नियंत्रित करने के लिए सदैव कार्यरत रहते हैं और साथ में देश की चोथी जागीर कहे जाने वाले मीडिया कर्मी भी ऐसी गुना खोरी को नियंत्रण में रखने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पुलिस डिपार्टमेंट और सरकार को मदद करते हैं। लेकीन अगर आप सोचो के ऐसी गुनाखोरी करनेवाले पुलीस या मीडिया कर्मी हो तो क्या होगा ? क्या कोइ प्रतिष्ठित अखबार का क्राइम रिपोर्टर अनेको हत्याएं कर सकता है? तो उसके लिए गमगीनी के साथ कहना पड़ेगा कि हां, ऐसा भी हो सकता है।

ईन्टरनेशनल क्राईम स्टोरी

◆ रामजी पानसेरीया-सुरत ◆

करीबन ७ साल पहले हॉलीवुड में सीरियल किलर फिल्म पर आयोजन हो रहा था। हॉलीवुड की इस फिल्म में सीरियल किलर का किरदार मशहूर आयरिश अभिनेता मिखाईल फासबेंडर करने वाला था। जिस पर यह फिल्म बनने वाली थी वह हत्यारा एक बेस्ट सेलर लेखक था। उसने काव्यो ,छोटी नवल कथाएं, नाट्यो और स्वजीवनी भी लिखी थी। फिल्मी समीक्षको ने इस फिल्म कथा को बहुत सराहा था। लेकिन उसने सीरियल किलर जेक द रिपर के जैसे ही वेश्याओं की हत्याएं की थी।

एक मसालेदार मनोरंजन फिल्म जैसा किरदार वाला इस पत्रकार का नाम था, जोहान 'जेक' ऊंटरवेगर, जो ऑस्ट्रीया के स्टायर मार्क नाम के शहर में एक

वेश्या और एक अमेरिकन सैनिक के सहवास से पैदा हुआ था। नामचीन बदमाशों की धाकधमकी, बहुत ही कंगालीयत भरी जिंदगी और दुनिया की सब झुग्गियोमें में होता है ऐसे अत्याचारों को सहते सहते उसके दिमाग में एक अजीब प्रकार का जुनून पैदा हो गया था। खास तौर पर महिलाओं के प्रति और उसमें भी वेश्याओं के प्रति उनके मन में

बहुत ही घृणा भरी हुई थी। १९५० में जन्मे हुए जेक ने १९७४ में पहली हत्या की। इस हत्या की वजह आज भी पुलिस वालों के लिए एक रहस्य ही है। १८ साल की एक वैश्या की हत्या उसने उसी की ब्रा का गले में फंदा लगाकर की थी। उसको आजीवन कैद की सजा हुई। अचानक क्या हुआ, किसी को मालूम न पड़ा लेकिन जेल में आते हुए शिक्षक की उसके मन पर असर हुई थी और कुछ ऐसा बना जेल में ही वो दिल लगा के पढ़ने लगा। जेल में ही वो नए-नए काव्यों की रचनाएं करता गया,वार्ताएं बनाता गया, नाटकों को भी लिखता गया। उसने ओस्ट्रियन भाषा में स्वजीवनी जैसा अंग्रेजी टाइटल 'ट्रिप टु प्रिझन'' जैसा होता है उसको भी लिखा और समीक्षकों ने उसकी सर्जन कला को बहुत जबरदस्त रूप से सहारा। जब १४-१५ साल जेल में बिताकर वह बाहर आया तो पुलिस को लगा कि अब जैक सुधर गया है। लेकिन पुलिस का यह अनुमान गलत साबित हुआ। जेल में से रिहा हुए जैक ने उस ही साल में ऑस्ट्रीया में और तीन वेश्याओं का कत्ल कर दिया। पुलिस गिरफ्तार करने के लिए पहुंचे इसके पहले वह भाग निकला। १९९१ में एक ओस्ट्रियन अखबार ने जेक को लॉस एंजेलिस और कैलिफोर्निया की वेश्याओं तथा अपराधों पर आर्टिकल लिखने का कार्य सौंपा। जेक की क्राइम स्टोरी बहुत ही प्रचलित हुई और बिक्री में भी अव्वल रही, लेकिन दिन में क्राइम रिपोर्टर बनकर घूम रहा जैक रात को पक्के गुनहगार की तरह वेश्याओं की ठंडे कलेजे से हत्या कर

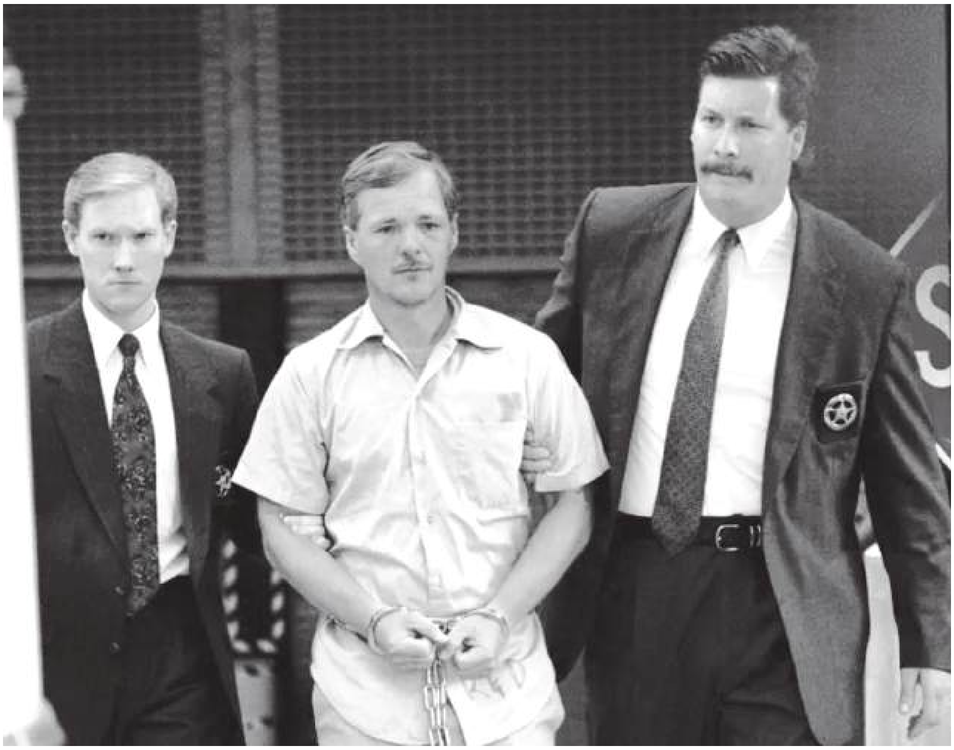

देता था।

अपने मैगजीन के लिए वह जब अमेरिका में था तब पुलिस को शेनोन एकस्ले, आयरीन रोडिग्वेज और शेरिओन लोंग नामकी तीन वेश्याओं का उन्ही की ही ब्रेसियर से फंदा लगाकर हत्या किए हुए मृतदेह मिले थे। हत्या से पहले उन तीनों के साथ सेक्स किया गया था और पेड़ की शाखा से पीटा गया था। फिर एकबार पुलीस आने से पहले जैक ऑस्ट्रीया भाग गया था। पुलिस के पास पूरे सबूत थे लेकिन जैक को जानकारी मिल गई थी इसलिए वह एक देश से दूसरे देश भागता फिरता था। उस दौरान समय-समय पर जेक वेश्याओं की हत्या करता रहा था। कत्ल करने की मोड्स ऑपरेंडी एक ही प्रकार की होने से पूरे यूरोपीय पुलीस को मालूम हो जाता था कि यह सब हत्याएं जेक ऊंटरवेगर ने की है। अलग अलग देशों की पुलिस उसको गिरफ्त में लेने के लिए जो हो सके वह सभी प्रयासों कर रही थी। भागदौड़ करते करते वह वापस अमेरिका में आया और जब वह फ्लोरिडा में था तब उसका पाप का घड़ा भर गया था। फ्लोरिडा के मियामी शहर एफबीआई ने २७ फरवरी,१९९२ को उनको गिरफ्तार कर लिया और फिर से उसको आजीवन कैद की सजा सुनाई गई। अदालत ने यह कड़क आजीवन कैद की सजा सुनाते समय एक शर्त भी रखी थी कि कभी भी जेक को पेरोल नहीं देना है। अदालत ने यह भी कहा था कि इस सजा के सामने जेक को अपील करने की मंजूरी दी गई थी। जेक ने भी अदालत में कहा था कि वह इस सजा के सामने अपील करेंगे। लेकिन २७ मे, १९९४ को सजा सुनाई गई उसी रात को ही उसने आत्महत्या कर ली थी।

यु.पी. स्क्रैप माफिया रवि काणा का अबजो का साम्राज्य

दोस्तों हमने कई बार अपने देश और विदेश के माफिया डॉन के बारे में लिखते रहते हैं। आज हम अपने देश के यूपी के स्क्रैप माफिया रवि नागर उर्फ रवि काणा की विस्तृत रूप से बात करेंगे, इसको पढ़ने के बाद आप भी दंग रह जाएंगे।

यूपी में जब से योगी बाबा ने सीएम की कुर्सी संभाली है तब से राज्य के माफिया और गेंगस्टारों को मानो के सांप सूंघ गया है। यूपी को माफिया मुक्त करने के लिए अभी भी पुलिस माफियाओ का सफाई करने का अभियान लगातार चला रही है। इसमें अभी-अभी स्क्रैप माफिया रवि नागर उर्फ रवि काणा पुलिस की नजरों में आ गया है। ४ महीने पहले जनवरी में नोएडा पुलिस ने रवि काणा की गर्लफ्रेंड काजल झा के दिल्ली के पोश एरिया में आई हुई १०० करोड रुपए के घर समेत २०० करोड रुपए की प्रॉपर्टी सील कर दी थी। अब रवि काणा की खुद की और उनके गुर्गो की १२० करोड़ की प्रॉपर्टी सील करने से सब लोगों की आंखें फटी रह गई है।

बहुत कम लोगों ने जिसका नाम सुना है ऐसा करोड़ो नहीं बल्कि अबजो रुपए की संपत्ति के मालिक यह रवि काणा नाम का माफिया अचानक कहां से टपक पड़ा? ऐसा सवाल सब लोगों के मन में उठ रहा है। एक महीने में ही रवि काणा की ३२० करोड़ की संपत्ति सील करने के बाद उसके पास असल में कितनी संपत्ति होगी ? ऐसा सवाल पैदा हुआ है। रवि काणा यूपी के खूंखार गैंगस्टर जैसे लाइम लाइट में नहीं आया है। इसलिए यूपी की पुलिस भी रवि काणा के काले करनामो सुन के अचंबित रह गई थी। कुख्यात गैंगस्टर अनिल दुजाना की मदद से रवि काणा बड़ा स्क्रैप माफिया बना।

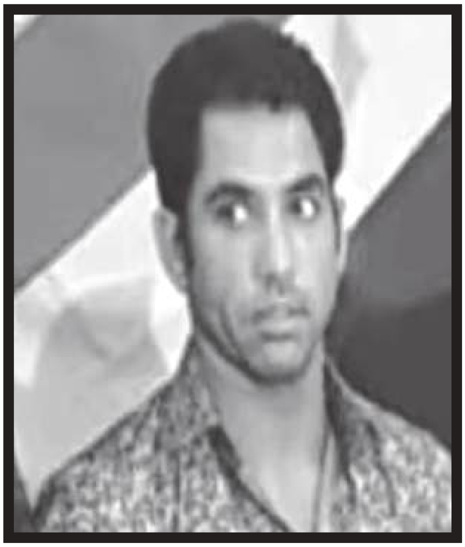

नेशनल क्राईम स्टोरी

◆ हृषिकेश बोरचे-मुंबई ◆

अचंबित होना भी सहज है, क्योंकि ४५ साल के रवि काणा ने दूसरे गैंगस्टरो जैसे हत्याएं, अपहरण समेत गुन्हाओ से काली कमाई करने के बदले 'कार्पोरेट स्टाइल क्राइम' किया है। दिल्ली और नेशनल कैपिटल रीजन (एनसीआर)में पिछले एक दशक से स्क्रैप माफिया के रूप में साम्राज्य बना के बैठा हुआ रवि काणा रंगदारी और माफियागिरी भी करता था, लेकिन व्यापार करना हो इस तरीके से करता था। इसलिए किसी की नजर में नहीं आया।

अगर रवि काणा ने उसके पास नौकरी मांगने के लिए २५ साल की लड़की पर बलात्कार ना किया होता तो शायद कोई उसको हाथ भी नहीं लग सकता था, क्योंकि नोएडा से दूर लखनऊ में बैठे हुए सत्ताधीशों को तो रवि काणा की माफियागिरी का पता ही नहीं था। यह लड़की रवि काणा के साथी राजकुमार के पास नौकरी मांगने आई थी। राजकुमार उसको रवि काणा के पास नौकरी के बहाने ले गया था। रवि ने उस पर बलात्कार करके अपनी हवस पूरी करके लड़की को अपने साथीदारों को सौंप दिया था। राजकुमार नागर, आजाद नागर और विकास ने भी इसके साथ बलात्कार गुजार के इस काले कारनामों का वीडियो बना लिया था। रवि काणा गैंग के गुंडे युवति को ब्लैक मेल करते रहते थे। इसलिए युवती ने उस से पीछा छुड़ाने के लिए आखिरकार दिसंबर, २०२३ में गैंगरेप की फरियाद यूपी पुलिस स्टेशन में की थी। उस वक्त से रवि काणा की बर्बादी का समय शुरू हो गया था।

नोएडा पुलिस रवि राणा को बचाती रहती थी लेकिन लखनऊ तक फरियाद की थी इसलिए पुलिस को सक्रिय होना पड़ा। लेकिन पुलिस ने सक्रिय होने से पहले रवि काणा को बता देने से वह फरार हो गया। लेकिन राजकुमार,आजाद

और विकास गिरफ्त में आ गए। नोएडा, गौतम नगर जिले में आता है। वहां के पुलिस कमिश्नर के तौर पे लक्ष्मी सिंघ फर्ज बजा रहे थे,जो लेडी सिंघम के नाम से पहचाने जाते हैं। लक्ष्मी सिंघ ने रवि काणा को गिरफतार करने के लिए छापा मारना शुरू कर दिया। वहां से रवि काणा का काले धंधे का पूरे हिसाब का साहित्य मिला। व्यापार के नाम से राणा ने खड़ा किया माफिया सम्राज्य का पर्दा फाश हो गया।

रवि काणा ने अपने भाई हरेंद्र प्रधान के साथ स्क्रैप यानी कि भंगार की माफियागीरी का व्यापार शुरू किया था। कुख्यात गैंगस्टर अनिल दुजाना भी रवि के इस धंधे में भागीदार था। २०१५ में हरेन्द्र की हत्या होने के बाद रवि काणा इस धंधे का चैंपियन बन गया था। दुजाना के डर से नोएडा, दादरी और जेवर ही नहीं लेकिन ओखला तक स्थित सभी फैक्ट्रियों को अपना भंगार जबरन रूप से रवि राणा को देना पड़ता था। रवि काणा यह सब भंगार सिर्फ १०% में खरीदता था और बाद में बड़े कारोबारी को बाजार कीमत से उंचे दाम में खरीदने के लिए मजबूर करता था। इस तरह से काणा भंगार के धंधे के बहाने फैक्ट्री मालिकों से फिरोती वसूलता था। ईस में से कुछ भंगार फैक्ट्री में रीसाइकिल किया जाता था। यह माल भी उंचे दाम लेने के लिए दबाव डाला जाता था। रवि की खुद की अपनी ट्रांसपोर्ट कंपनी भी थी। इस कंपनी की ट्रको के नाम से जूठे इ वे बिल बनाया जाता था। जब भी फैक्ट्री में ले जाया जाता माल पकड़ लिया जाता तब ये इ वे बिल भेज के माल को छुड़ा लेता।

रवि काणा की गैंग रियल एस्टेट के प्रोजेक्ट के लिए लोखंड के रोड़े ले जाती ट्रकों को रोक कर उसके रोड़े को ट्रकों में से उतार लेते और धमका कर कंपनीओ को जितना माल फैक्ट्री से आया होता इतना ही माल उपयोग में लिया होने का रजिस्टर बुक में एंट्री करने को बोलता और ट्रकों में से उतारा हुआ माल दूसरे बिल्डर को उंचे दाम पर खरीदने के लिए मजबूर करता। अनिल दुजाना के डर से कोई रवि काणा के सामने फरियाद करने की हिम्मत नहीं करता। अगर अनिल दुजाना यूपी पुलिस के एनकाउंटर में मारा ना गया होता तो कदाचित रवि काणा की माफियागीरी चालू ही रहती क्योंकि बलात्कार की फरियाद करने वाली लड़की को पुलिस स्टेशन तक पहुंचने ही नहीं देते। रवि काणा के साम्राज्य में पुलीस जैसे जैसे भीतर में घुसती जाती है वेसे-वेसे नई नई संपत्ति बाहर निकलती है। रवि काणा का अलग अलग बैंकों में सब से ज्यादा लॉकर्स होने का माना जाता है, जिस में नकदी और सोना छुपा पड़ा है। दूसरी ओर रवि काणा फरार है। नोएडा पुलिस महीनो से उसे ढूंढ रही है,लेकिन वह हाथ में नहीं आता। ऐसे में रवि काणा विदेश पलायन होने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।

रवि काणा की गर्लफ्रेंड काजल झा और पत्नी मधु गैंग की संचालन करती है।

काजल झा

स्क्रैप माफिया रवि काणा के गैंग में दो महिला केंद्र स्थान पर है। एक उसकी पत्नी मधु और दूसरी उसकी गर्लफ्रेंड काजल झा। मधु नागर व्यापारियों को धमका कर फिरोती की वसूलात करती है। जब की काजल झा काले धंधे का हिसाब रखती है। गोवा में रिसोर्ट, क्लब हाउस,देहरादून में रिसोर्ट जैसी रवि काणा की काली कमाई की संपत्ति का हिसाब किताब काजल झा करती है। रवि काणा गैंग द्वारा चोरी किए गए रोड़े और स्क्रैप को पंजाब की फैक्ट्रीयों में पिघलने के लिए भेजे जाते थे। यह सब फैक्ट्री की सर्वे सर्वा यानी की मालिक भी काजल झा ही होने का सामने आया है।

रवि काणा के सामने युवती ने बलात्कार की फरियाद करने के बाद रवि फरार हो गया तब मधु भी उसके साथ उड़न छू हो जाने से पुलिस ने सबसे पहले काजल झा को निशाने पर लिया है। रवि काणा ने साउथ दिल्ली के पोश इलाके न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी में गर्लफ्रेंड काजल को तीन मजले का महल जैसा मकान खुश होकर इनाम में दिया था। शुरुआत में बताया ऐसे करीबन १०० करोड़ की इस कोठी को पुलिस ने सील लगा दिया था। पुलिस छापा मारने आ रही है ऐसी माहिती मिलने पर काजल वहां से रफू चक्कर हो जाने से पुलिस की गिरफ्त में नहीं आ सकी थी। काजल झा मूल रूप से बिहार से थी और दश साल पहले नौकरी की तलाश में रवि काणा को मिली थी। उसकी खूबसूरती पर रवि फिदा हो गया था। उसने काजल झा को नौकरी के साथ जो चाहिए वह देने का उसको वादा किया था। काजल ने भी मौके का फायदा उठाकर उस से १५ साल बड़े रवि काणा की गर्लफ्रेंड बन गई और तब से वह उसके साथ ही कार्य करती है।

5 मोड्स ऑपरेंडी

जीससे साइबर गुनहगारों सकंजे मे आ जाते है।

साईबर क्राइम

◆ राजन कालरीया ◆

आज के समय में हमारे पूरे देश में साइबर क्राइम के केस में एकदम बढ़ोतरी हुई है। थोड़े समय पहले ही दिल्ली पुलिस ने साइबर गुनहगारों द्वारा आजमाई जाती पांच पद्धतिओ की पहचान कर ली है और लोगों को उसके बारे में चेतावनी भी दी है। दिल्ली पुलिस के इंटेलिजेंस फ्यूजन और स्ट्रेटेजीक ऑपरेशंस या साइबर क्राइम यूनिट के बताए मुताबिक इस गुना की पद्धतियों में फेक ट्राई और फेडेक्स कुरियर कंपनी कॉलर्स, होम जॉब या टेलीग्राम धोखा गड़ी, सेक्सटोर्शन ,बनावटी परिवार के सदस्य और तकलीफ में दोस्त और ओटीपी या लिंक आधारित धोखा गडी का समावेश होता है। हाल ही के नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े के मुताबिक दिल्ली में २०२२ में ६८५ साइबर क्राइम केस रजिस्टर हुए थे। जबकि २०२१ में ३४५ और २०२० में १६६ कैस रजिस्टर हुए थे। साइबर गुनहगारो द्वारा उपयोग में ली जाति ईस पांच मोड्स ऑपरेंडी को यहां हम थोड़े विस्तृतरूप से जानते हैं।

(१) जाली TRAI (टेलीकॉम रेगुलेटरी ओथोरिटी ऑफ़ इंडिया) और फेडेक्स कुरियर कंपनी कॉलर्स।

इस मोड्स ऑपरेंडी में किसी व्यक्ति को अनजान नंबर से फोन आता है और कहां जाता है कि उसका मोबाइल नंबर थोड़े समय में रद्द हो जाएगा। कॉलर व्यक्ति उस व्यक्ति को ९ नंबर दबाने का बोलता है, जो धोखागड़ी करने वाले के द्वारा सेट किया गया नकली कॉल सेंटर के साथ लिंक हुआ होता है। संभवित पीड़ित को बाद में कहा जाता है कि मोबाइल नंबर पर आतंकवादी लिंक होने की जानकारी मिली है और हवाला ऑपरेटर के जरिए व्यक्ति के खाते में कितनी राशि जमा की गई है। जब ऑथराइजेशन के लिए पूछताछ करने में आती है तब कोलर द्वारा व्यक्ति को स्काइ पे कॉल पर आने को कहा जाता है और जानकारी देता है कि उसकी डिजिटल गिरफ्तारी होगी। जल्दी ही व्यक्ति को सीबीआई और इनकम टैक्स जैसी सुरक्षा एजेंसीयो की ओर से जाली नोटिस भी मिलती है। उसके बाद धोखागड़ी करने वाले उसके टारगेट प्रति सहानुभूति दिखाते हैं और सहाय करने का वचन देते हैं। अगर जाल में आ गई व्यक्ति उसकी सहाय मानती है तब वह लोग वेरिफिकेशन के बहाने बैंक की जानकारी ले लेते हैं और व्यक्ति को दो-तीन दिन में राशि वापस करने का वचन के साथ उसके द्वारा शेयर की गई जाली सरकारी अकाउंट नंबर में कुछ पैसे डालने को कहते हैं। पुलिस के बताए मुताबिक फेडेक्स कुरियर कंपनी के एजेंट के तौर पर धोखागड़ी करने वालों भी समान मोड्स ऑपरेंडी का उपयोग करते हैं। एक अफसर के कहे अनुसार पिछले १० महीने से इस प्रकार के धोखागड़ी के किस्से बन रहे हैं। ऐसे किस्सों में जाली कुरियर कंपनी एजेंट सामान्यतः अपने संभावित टारगेट को कहता है कि उसको मिलने वाले पार्सल में दवाइयां है। बाद में यह एजेंट उस व्यक्ति को सुरक्षा एजेंसी द्वारा कोई भी संभवित कार्यवाही से बचने और पैसे लेने के लिए सहाय का प्रस्ताव रखता है।

(२) घर बैठे नौकरी और टेलीग्राम धोखागड़ी

इसमें संभवित टारगेट को उसके व्हाट्सएप नंबर पर पार्ट टाइम जॉब ऑफर के साथ संदेश मिलता है । व्यक्ति को टेलीग्राम में खाता खोलने को कहा जाता है । सम्मति देने के बाद उसका नंबर ग्रुप में ऐड किया जाता है । बाद में ग्रुप एडमिन कुछ कार्य करने को देते हैं । सामान्यतः कुछ सोशल मीडिया अकाउंट्स को फॉलो करना है या सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वीडियो लाइक करने को कहा जाता है । संभवित पीड़ित को १ दिन के कार्य के लिए हजारों रुपए का लालच दिया जाता है । शुरू में व्यक्ति को सिर्फ क्लिक करने के लिए डेढ़ सौ रुपया से ३०० रुपया तक मिलते हैं । एक बार कोई व्यक्ति रोजाना रूप से काम करना शुरू करता है तो उनको कुछ कार्यों के लिए कुछ पैसा जमा करने के लिए कहा जाता है । वैसे तो शुरुआत में व्यक्ति को थोड़ा रिफंड भी मिलता है । इस पद्धति के बारे में एक अफसर ने कहा कि ग्रुप के दूसरे सदस्यों सामान्य रूप से संभवित टारगेट को ज्यादा पैसा कमाने को प्रोत्साहित करते हैं, कि हमने भी पहले इतना पैसा डाला है और इतना इतना मुनाफा हुआ है । अधिकारियों को कहने के मुताबिक ग्रुप के अन्य सदस्यों का अकाउंट वास्तव में एक ही व्यक्ति हैंडल करता है ।

(३) सेक्स टोर्शन ।

ईस मोड्स ऑपरेंडी के तले संभवित टारगेट को समयानुसार वीडियो कॉल मिलते हैं । जब व्यक्ति वीडियो कॉल अटेंडे करें तब सामने उसको एक महिला अश्लील कार्य करती देखने को मिलती है । जब व्यक्ति फौन डिस्कनेक्ट करता है तब धोखागड़ी करने वाला या तो वीडियो रिकॉर्ड कर लेते हैं या वीडियो चैट के स्क्रीनशॉट ले लेते हैं । उसके बाद उस व्यक्ति को पुलिस अफसर जैसे दिखते व्यक्ति का फोन कॉल आता है और उसको कहा जाता है कि कॉल करने वाली महिला ने उसके विरुद्ध शिकायत की है । बाद में पुलिस अफसर जैसे दिखता व्यक्ति टारगेट को वीडियो कॉल का स्क्रीनशॉट भेजता है और किस घटना को रफेदफे करने के लिए पैसे की डिमांड करता है । और पैसे पड़ा लेता है । बड़ी संख्या में लोग सेक्स टोर्शन का शिकार बन चुके हैं और अपने पैसे खो चुके हैं । थोड़े समय पहले ही गुजरात के गृहमंत्री हर्ष संघवी ने ऐसा कहा है कि इस प्रकार के कॉल द्वारा कोई भी आपको फसाने की कोशिश करें तो बेबाक, बिना समय गंवाए पुलिस को जानकारी दें, पुलिस आपकी सहायता करेगी ।

(४) जाली परिवार सदस्य या दोस्त तकलीफ में है ऐसा बहाना ।

इस पद्धति में शिकार बनने वाली व्यक्ति को एक अनामी नंबर से कॉल आता है । कॉलर पुराना दोस्त या संबंधी होने का बताता है । धोखागड़ी करने वालों AI का उपयोग व्यक्ति के जान पहचान वाली व्यक्ति के आवाज के अनुकरण करने के लिए भी कर सकते हैं । कॉल करने वाली व्यक्ति कहती है कि वह तकलीफ में है और उसको पैसे की आवश्यकता है । कॉल करनार टारगेट को अकाउंट में पैसे डालने के लिए बोलता है लेकिन पैसे भेजने वाले को बाद में मालूम पड़ता है कि कॉलर तो झूठ बोल रहा था । इस कैटेगरी में धोखागडी करने वाले मेट्रोमोनियल वेबसाइट पर प्रोफाइल बनाकर महिलाओं के साथ धोखागड़ी करते हैं । और एक बार वह महिला को विश्वास में ले लेते हैं, बाद में वह उसको कोई भी बहाने से पैसे जमा करने को कहते हैं । धोखागडी का मकसद पूरा हो जाने पर ऐसे लोग कॉल उठाना बंद कर देते हैं । इंस्टाग्राम या दूसरे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी जान पहचान वाले का अकाउंट हैक करके या तो इसके जैसा ही दूसरा अकाउंट बनाकर दोस्तों परिचितों से सहाय करने के बहाने पैसे भेजने को कहते हैं ।

(५) ओटीपी और लिंक आधारित धोखागड़ी

यह मोड्स ऑपरेंडी बरसों से साइबर गुनहगारों द्वारा उपयोग लिए जाने वाली सबसे सामान्य पद्धति है । इसके तले व्यक्ति को सामान्य रूप से मेईल पर ऑफर्स और इनामो की लिंक का संदेश मिलता है । व्यक्ति को लिंक खोलने और पैसे को प्राप्त करने की प्रक्रिया को फॉलो करने को कहा जाता है । जो लोग कम टैक्स बचाने वाले हैं वह अभी भी ऐसे घोटाले में फस जाते हैं । धोखागडी करने वाले कुरियर से संदेश भी भेजते हैं और संभवित टारगेट को उसके द्वारा शेयर किया गया अकाउंट नंबर में पैसे जमा करवाने को कहते हैं ।

दोस्तों, अब तो आपको साइबर क्राइम के बारे में जानकारी मिल गई है तो आप भी अब सावधान हो जाइए और ऐसी धोखागड़ी का शिकार ना बने और दूसरे को भी यह जानकारी के बारे में बताएं ताकि वह लोग भी ऐसे साइबर क्राइम का शिकार ना बने ।

प्रसन्नचित्त रहने के लिए मोबाईल का उपयोग कम करे

आज के युग में सबको मालूम है कि मोबाइल फोन का कितना ज्यादा उपयोग हो रहा है। जहां भी नजर डालो लोग गर्दन झुकाए मोबाइल की स्क्रीन में आंखें डाल के खो जाते हैं। छोटे-छोटे बच्चे भी मोबाइल लेकर कई घंटे तक बैठे रहते हैं। मोबाइल आवश्यक है लेकिन इतना भी आवश्यक नहीं है कि आप कई घंटों मोबाइल में खो जाओ और परिवार, दोस्तों से दूर हो जाओ। मोबाइल के ईतने आदी हो जाने से आदमी अपना कार्य सही तरह से, एकाग्रता से नहीं कर सकता और दिमाग से हमेशा थकान महसूस करता है।

सोश्यल मीडिया की आदतों से लोग डिप्रेशन महसूस करते हैं। मानवी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। अपने परिवार, व्यापार और शिक्षा में भी ध्यान कम हो जाता है। लोग इस व्यसन से छूटना चाहते हैं लेकिन आज के समय में मोबाइल फोन के हम इतने आदी हो गए हैं कि उससे छुटकारा पाना मतलब ड्रग्स के व्यसन से मुक्त होना। स्मार्टफोन का उपयोग बढ़ जाने से सोशल नेटवर्क का उपयोग भी बहुत ही बढ़ गया है। लोग छोटे-बड़े स्मार्टफोन को अपनी पर्सनल दुनिया बनाकर बैठ गए हैं।

अनेक अकस्मात के पीछे मोबाइल की आदतें सामने आई है। मुंबई में २०२३ की साल में १२७७ लोगों की रेलवे ट्रैक पर मौत हुई थी। इन लोगों ने कानों में गाना सुनने या बातचीत करने के लिए ईयर फोन लगाइए हुए थे। ऐसे लोगों को पीछे से आती ट्रेन की आवाज नहीं सुनाई देती है और मौत को भेटते हैं।

हाल में ही एक मोटिवेशनल स्पीकर ने सामने बैठे हुए युवाओं को पूछा कि आप मे से कितने लोग एकादशी का उपवास रखते हैं ?संकट चतुर्थी का उपवास रखते हैं? शनिचर को उपवास रखते हैं ? इस सवालो के उत्तर में अनेको युवाओं ने अपने हाथ ऊपर किया था। कुछ लोगों ने अपनी आर्थिक हालत में सुधार हो, कुछ लोगों ने अपना स्वास्थ्य सही हो इसलिए, तो कुछ लोगों ने अध्यात्मिक वजह से उपवास रखते हैं ऐसा बताया था। तब मोटिवेशनल स्पीकर ने कहा कि जैसे आप आर्थिक, शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए उपवास रखते हैं वैसे ही हफ्ते में एक दिन मोबाइल फोन से दुरी रखो, जिसके कारण आपको कुछ नया सोचने का समय मिलेगा और आपके आसपास की दुनिया में क्या चल रहा है वह देखने के लिए समय मिलेगा। यहां पर जो मोटिवेशनल स्पीकर ने कहा है वह सब जानते हैं लेकिन समझने के लिए कोई तैयार नहीं है। व्हाट्सएप छोड़कर इंस्टाग्राम में लगे रहते हैं। अपने को कौन फॉलो कर रहा है। कौन देख रहा है। खुद सब जानते हैं और ज्यादा होशियार है ऐसा समझने वाले हजारों यूट्यूबरो की बाल मृत्यु हो गई है। खुद के घर के लोगों और नजदीक के दोस्तों से दूर करने वाले मोबाइल ने पुराने रितरसमे भी भुला दिए हैं। मैयत में शामिल होने वाले लोग भी मोबाइल को छोड़ते नहीं है। स्कूटर या बाइक चलाते समय मोबाइल पर बातें करने वाले लोग खुद और दूसरे राहगीरों के लिए खतरे समान है।

मोबाइल की आदत है छोड़ने के लिए दृढ़ मनोबल की आवश्यकता होती है। रात को घर जाने के बाद परिवार के दूसरे सदस्यों से बातचीत करने के लिए मोबाइल को दूसरे कक्ष में रख सकते हैं। जिन लोगों के करोड़ों का व्यापार है वह भी रात को फोन नहीं उठाते हैं। आप जब सोश्यल नेटवर्क पर छुट्टी रखो तब दोस्तों को मैसेज कर दो के, सॉरी मैं शनिचर को उपवास रख रहा हूं। तब फोन का उपयोग नहीं करूंगा और आप भी मुझे मैसेज या कॉल मत करना। इससे यह भी हो सकता है कि आपके दोस्तों आपकी बात मानेंगे और आपको मैसेज या कॉल नहीं करके शायद मोबाइल की आदत को छोड़ने का अभियान में जुड़ भी सकते हैं।

यह सहज बात है की जब आप मोबाइल उपवास रखेंगे तो बार-बार मोबाइल का ही खयाल आएगा, जैसे अन्न का उपवास रखेंगे तो आपको खाने का ही ख्याल आएगा। लेकिन आप दृढ़ संकल्प से मोबाइल की आदतों से छुटकारा पा सकते हैं और अपने आप को मानसिक तौर पर एकदम से प्रफुल्लित और तरोताजा रख सकते हैं। यह मोबाइल की आदतों से छूटना बहुत ही जरूरी है क्योंकि टेक्नोलॉजी के संशोधनों मानव जीवन की सुखाकारी लाने के लिए है लेकिन सोश्यल नेटवर्क के अमर्याद उपयोग लोगों को डिप्रेशन की ओर खींच रहे हैं।

Now Open@Jodhpur,Satelite

Services

Hair:- • Haircut & Styling • Male Trimming • Hair Rituals • Scalp Care • Straightening/Smooth ning/Rebonding • Hair Colour • Ironing/Crimping/Tongs • Keratin Treatment • QOD/Protein Treatment • Hair Treatment

SKIN:- • Bleach • Mud Mask • D-Tan • Cotton Extract • Facials And Cleanups • Threading • Sugar Waxing • Italian waxing • Pinkini Stripeless Waxing • Italian Wax Male

Make up:- • PAC • Nars • Huda Beauty • Makeup studio

Meni–Pedi:- • Vedic Valley • AVL Pedi cruse • Bombini • Foot Facial

Nail Studio - LYN

About us

Established in 2013, Zion Salons has gained prominence as one of the best salons in Ahmedabad, Gandhinagar & Bangalore. With thousands of satisfied happy customers spread across these three cities, we aim to extend our services nationwide and, someday, the world!

Over the years, we have dedicated ourselves to mastering our craft and continuously advancing our expertise in the industry. We wish to provide our clients with exceptional services and deliverables of the highest quality. Across all our branches, we offer an extensive range of hair, skin, makeup, and nail services using internationally renowned products. Our ultimate goal at ZION is to empower every customer to experience true beauty on the surface and from within. We strive to create an atmosphere where you can feel extraordinary. Embrace your uniqueness and enhance your well-being at Zion Salons because, after all, who doesn't deserve to feel special?

SHOP NO.19, AARYABHUMI, BILESHWAR MAHADEV MANDIR ROAD, JODHPUR TEKRA, AHMEDABAD, GUJARAT - 380015

www.zionsalons.com zionsalons +91 91674 98393

SARTHAK
HOSPITAL • ICU
Caring for life....

उपलब्ध सवलतें:-
- 24x7 इमरजेंसी.
- दवाइयां, ओपीडी और इंडोर यूनिट डिलक्स रूम, स्यूट रूम, स्पे. रूम, सेमी स्पे. रूम्स और मल्टी बेड रूम्स के साथ उपलब्ध.
- आईसोलेशन सवलतों के साथ ८ बेडेड आइसीयू.
- इन्वेसिव बीपी मोनिटरिंग और सीएमएस के साथ हाई ऐंड वेंटिलेटर्स, मल्टीपारा मॉनिटर्स.
- बेड के साथ ही डायालिसीस, एक्स रे,सोनोग्राफी और इको कार्डियोग्राफी की सवलतें.
- अद्यतन उपकरणों के साथ ऑपरेशन थियेटर.
- फुल टाइम ईएनटी सर्जन (डॉ. कालिन्द भालानी), सभी प्रकार के एंडोस्कोपिक ईएनटी सर्जरीझ म्युकोर्मिकोसीस समेत सवलतें.

उपलब्ध सारवार सवलतें :-
- बहुत ही जटिल प्रकार की बीमारियां जेसे कि, एआरडीएस, सेप्सिस, मल्टी ऑर्गन फेल्योर्स.
- इन्फेक्शन और ट्रॉपिकल डिसीझ - मलेरिया, डेंगू, टाइफॉईड, पीयूओ.
- टोक्सिकोलोजी और पॉईझनिंग मेनेजमेंट.
- ट्रॉमा, सर्जिकल और ओबस्ट्रेटिक क्रिटिकल केयर.
- इन्वेसिव आईसीयू प्रोसीजर्स-सेंट्रल लाइन, आर्टिरियल लाइन, डायलिसीस केथेटर, परक्यूटिनियस ट्रेकियोस्टोमी, आईसीडी, प्लीयुरल और एसिटिक टेपिंग

-: हमारे क्रिटिकल केयर स्पेशयालिस्ट :-
- डॉ. अमित पटेल
- डॉ. अमित रूपाला
- डॉ. पुनित थोरिया
- डॉ. विवेक जिवानी

स्वाइन फ्लू को हराकर 'सार्थक' हुआ नया जीवन

सार्थक हॉस्पिटल में पंकजभाई वृजलाल पंड्या नामके दर्दी को H1N1 यानी कि स्वाइन फ्लू पॉजिटिव और जटिल रुप से न्यूमोनिया का निदान होने पर, सार्थक हॉस्पिटल के डॉ. अमित पटेल ने आईसीयू विभाग में तत्कालीन एडमिट कर के घनिष्ठ सारवार शुरू कर दी।

सारवार के दौरान कई तकलीफें जैसे कि, इन्फेक्शन, किडनी के लिए डायालिसीस, ऑक्सिजन बहुत ही कम हो जाना और बीपी विषयक तकलीफे होने से पंकजभाई को ३५ दिन तक सारवार के लिए रखा गया था जिसमें २८ दिन तक उनको वेंटीलेटर पे रखा गया था. पंकजभाई की जिंदगी को बहुत ही खतरा था और उनका बचना बहुत ही मुश्किल था. पंकजभाई के परिवार के सदस्यों भी गहरी चिन्ता में पड़ गए थे. लेकिन सार्थक हॉस्पिटल के डॉ. अमित पटेल, डॉ. अमित रूपाला, डॉ. पुनित थोरिया, डॉ. विवेक जिवानी ने घनिष्ठ सारवार और अपनी कुशलता सबब आखिरकार पंकजभाई को कई जटील प्रकार की बिमारियोसे मुक्त किया और अब पंकजभाई एकदम स्वस्थ और खुशहाल है।

दर्दी पंकजभाई ने कहा कि, 'सार्थक हॉस्पिटल के कुशल डॉक्टर्स ने मेरा नया जीवन 'सार्थक' किया है और इसी के लिए में यह सब डॉक्टर्स का आभारी हुं।'

3rd Floor, Ambition Plus, Rajnagar Chowk, Nana Mava Main Road, RAJKOT - 360004. sarthakhospitalrajkot@gmail.com

OPD Appointment : 94099 33334 | Emergency Helpline : 94099 33332

YOUR SAFETY IS OUR RESPONSIBILITY

Paresh R. Maru

Mo. 98258 26649

YASHVI
Enterprise
Mfg. of Fire Equipments

YES.V
Fire & Safety
Installation of Fire System

+91 72020 26649
yashvienterprise710@gmail.com
yesvfireandsafety@gmail.com
www.yashvienterprise.com

Krishnanagar Main Road,
Samrat Ind. Area, Opp. Gokuldham Gate,
Near J.K.Machine Tools,
Rajkot-360004

Flavortone

Multi Cuisine Restro

Sp.Punjabi | Chinese | South Indian
Gujarati | Fastfood | Sizzler | Lassi
Unlimited Gujarati | Unlimited Punjabi

PARTY PLOT UP TO 500 MEMBER CAPACITY

Birthday Party | Kitty Party | Business Meet
Baby Shower | Ring Ceremony | Get Together
Special Events | Any Other Function

New 150 Feet Ring Road, Nr.Katariya Chowk
Opp. Toyota showroom, Nr.Connplex
Smart Theatre, Rajkot.

Mo. 8488885535

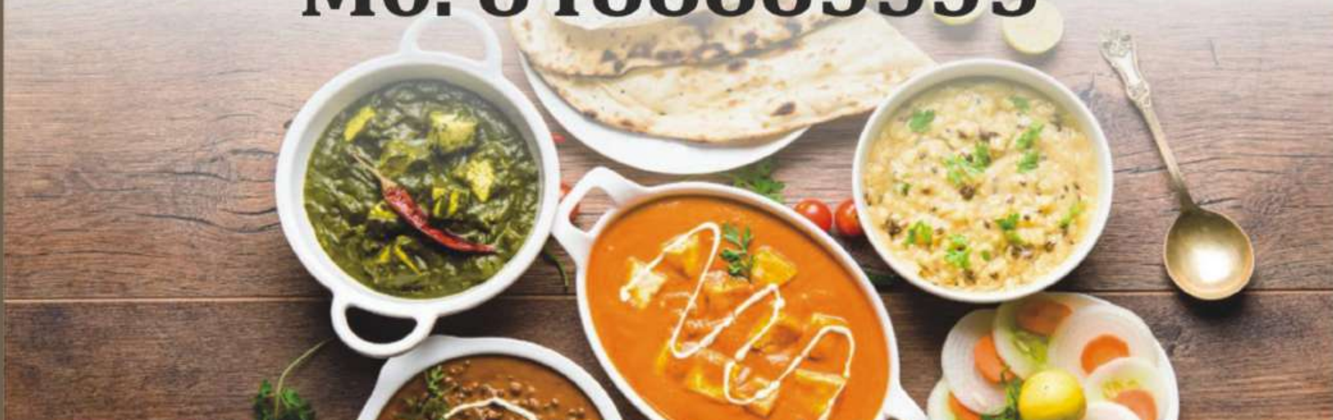

महा पराक्रमी वीर योद्धा तोगाजी राठौर की सच्ची कहानी

....जो सीर्फ अपनी विरता को दिखाने के लिए शहिद हो गऐ ।

मुगलों, पठानों, सूरी, घोरी जैसे विधर्मियों ने हमारे हिंदुस्तान की शानो शौकत और जहोजलाली कि बातें सुनकर उनको हासिल करने के लिए हमले किए और हमारे हिंदुस्तान पर अपनी हुकूमत चलाई। सबसे ज्यादा हुकूमत मुगलों ने चलाई करीबन ३३२ सालों तक मुगलों ने हमारे देश में शासन किया था। ई.स. १५२६ में मुगल बादशाह बाबर ने दिल्ली के पानीपत की पहली लड़ाई में लोढ़ी वंश के आखरी बादशाह इब्राहिम लोदी को हराकर अपने मुगल वंश की स्थापना की थी। और १५२६ ईस्वीसन के ३३२ साल बाद आखिरी मुगल बादशाह बहादुर जफर को अंग्रेजों ने १८५७ में एक सिपाही विद्रोह में कैद करके ७ अक्टूबर, १८५८ को देश निकालने की सजा सुनाई थी।

ई.स. ३३२ सालों के मुगल राज के सामने हमारे देश के अलग-अलग प्रदेश के हिंदू राजाओं ने बहुत सी लड़ाई लड़ी। कई वीरगति से प्राप्त हो कर गए और अपने वीर पराक्रमों की वीरगाथाएं इतिहास के

पन्नों में छोड़ते गए। हमारे ऐसे कई हिंदू राजाओं ने अप्रतिम शौर्य दिखाके के मुगलों को खदेड़ने का काम किया था। समय मिलने पर हम उन वीरों की बात भी करेंगे लेकिन आज हम यहां जो बात करने वाले हैं वह थोड़ी अलग प्रकार की है और सिर्फ

इतिहास के पन्नो से...

◆ विजय साणथरा ◆

अपनी वीरता साबित करने के लिए हंसते-हंसते अपने प्राण न्यौछावर करने वाले एक क्षत्रिय योद्धा की बात है । दोस्तों, ऐसे कारनामे सिर्फ महा पराक्रमी लोग ही कर सकते हैं और इसी का इतिहास रचा जाता है । अपने ईस आधुनिक युग में ऐसी बातें आपको कल्पनातीत लगेगी । लेकिन यह बात सच है और इतिहास के पन्नों में सच्ची घटना के तौर पर लिखी हुई है । मित्रों, आज हम बात करेंगे राजस्थान के महावीर पराक्रमी योद्धा तोगाजी राठौड़ की । जिसकी पराक्रम गाथा को पढ़कर आप भी अचंबित हो जाएंगे और उनके प्रति आदर की भावना आपके दिल में उठेगी यह हमारी गारंटी है ।

यह सच्ची घटना ई.स. १६२० और १६३८ के मध्य में बनी थी ऐसा इतिहास में लिखा है । उस समय दिल्ली पर मुगल शहेंशाह शाहजहां का शासन था । तब जोधपुर में महाराजा गजसिंह का शासन था और तोगाजी राठौर रोहिंडी ठिकाने के जागीरदार थे । दिल्ली के दरबार में कचहरी में कोई प्रश्न और विषयों पर चर्चा विद्धानों में होती रहती थी । इस तरह दिल्ली दरबार में एक दिन कचहरी लगी थी और दिल्ली का शहेंशाह शाहजहां मयूरासन पर बिराजमान था । इस सभा में ७० खान, ७२ उमराव, दीवान, मंत्री, पटावत, पटावरी, काजी, पंडित अपने अपने नियत स्थान पर विराजमान थे । तब अचानक शाहजहां मैं अपने चहीते दीवान/सूबे मीरखान को कहा, ''मेरे मन में एक सवाल कई दिनों से उठा है लेकिन किसी ने किसी काम की वजह से वह सवाल में भूल जाता हूं और आज वह

सवाल फिर से मेरे मन में उठा है कि मुसलमान बादशाहत होने के बावजूद यहां पहले ७२ हिंदू उमराव और ७० खान की बैठक क्यों है? खान की दो बेठक कम क्यों है ?'' शाहजहां का सवाल सुनकर मीर खान के होंश उड़ गए क्योंकि उसको यह सवाल का असली जवाब मालूम था । लेकिन उसको यह भी मालूम था जब वह शहंशाह को बताएंगे तब शहंशाह गुस्से से लाल पीले हो जाएंगे । फिर भी जब शहंशाह ने सवाल किया है तो जवाब तो देना ही पड़ेगा इसलिए मिर खान ने शाहजहां को डरते हुए कहा कि, ''जहांपनाह आपके सवाल का सच्चा जवाब दूं या गलत?'' शाहजहां कड़क आवाज में बोला की, ''मीर खान तुम तो जानते ही हो कि यहां गलत बातें करने की क्या सजा मिलती है ।'' तब मीरखान वापस घबराते हुए बोला कि ''माफ करना शहंशाह लेकिन आप सवाल का सही जवाब सुनने के बाद आप मेरे पर क्रोधित हो के कोई सजा तो नहीं सुनाएंगे ना?'' तब शहंशाह ने कहा की ''नहीं ऐसा कुछ नहीं होगा तुम मेरे सवाल का सही जवाब बताओ यह जवाब जानने लिए मैं बहुत ही व्याकुल हूं ।''

अब मीरखान ने थोड़ा स्वस्थ होकर बताया कि ''शहंशाह माफ करना लेकिन यह बात सच है कि जो दो काम हिंदू कर सकते हैं वो मुसलमान नहीं कर सकते । इसलिए हिंदू उमराव की दो बैठके ज्यादा है ।'' अब शाहजहां कुतुहल से बोला ''वह कौन सी दो बातें हैं जो हिंदू कर सकते हैं और हम मुसलमान नहीं कर सकते जल्दी बताओ मुझे ।'' तब मीर खान बोला की ''पहली बात, अगर लड़ाई में हिंदू योद्धा का मस्तक कट जाता है तो उसका शरीर लड़ाई में डटा रहता है मतलब हिंदू योद्धा बिना सर के भी लड़ सकता है । दूसरी बात यह है कि, नई शादी हुई हो तो भी ऐसे हिंदू योद्धा की बीवी अपने पति का कटा हुआ सर को गोद में लेकर जिंदा चिता पे चढ़ जाती है और अपने शरीर को अग्नि के हवाले कर देती है ।'' मीर खान की बातें सुनते हैं शाहजहां गुस्से हो गया वह बोला ''यह तो मैंने भी सुना है लेकिन कभी ऐसा होता देखा नहीं है । यह सब बातें सिर्फ कल्पनाए है असल में ऐसा होता नहीं है । लेकिन तुमने बताया है तो मैं तुम्हें पूछता हूं तुमको यकीन है क्या ऐसी बातों में? और तुमने जो हिंदू उमराव के बारे में दो बातें कही है वह मुझे साबित करके दिखाओ वरना तुम्हारा सर शरीर से अलग कर दिया जाएगा और खान की दो बैठक हिंदुओं की बैठकों से ज्यादा करवा दूंगा । यह बात साबित करने के लिए तुम्हारे पास ६ महीने

का समय है। तुम मुझे यह बात साबित करके दिखाओ वरना तुम्हारा सर धड़ से अलग किया जाएगा।''

मीर खान तो मानो के काटो तो लहू ना निकले जैसी स्थिति में आ गया और मनोमन बोलने लगा कि ''मैं ने सच्ची बात बता के खुद ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार दी है। अब यह साबित करने के लिए किसी बेगुनाह को अपनी जान देनी पड़ेगी और यह बात साबित करने के लिए क्या करूं।''

जोधपुर के महाराजा गजसिंह जी सभा में मौजूद थे उनको बादशाह के बर्तन से खेद हुआ की क्षत्रियों की वीरता की बातें उजागर करने से मीरखान आफत में आ गए। उन्होंने मदद देने की ठानी और अपने मुकाम पर आए और सभी उमरावो को निमंत्रण दिया और साथ में मीरखान को भी निमंत्रण देने के लिए चोबेदार को भेजा। नियत समय पर सभी इक्कट्ठे हो गए तब गजसिंह ने क्षत्रियों से कहा कि ''हमारे बादशाह ने कहा वह गलत है लेकिन मीर खान जी ने जो बात कही वह सच है उन्होंने तो सिर्फ हमारी क्षत्रिय कॉम की बहादुरी की बात की है। इसमें उनका कोई लेना नहीं है। जो सच है वह कहां है। लेकिन बादशाह ने जीद पकड़ ली है कि यह वीरता की बात साबित करके बताओ नहीं तो तुम्हारा (मीर खान) का सर धड़ से अलग कर दूंगा। वो बेचारा सच बोलने में और क्षत्रियों की वीरता की बात करने में फस गया है। अब उनकी जान हमको बचानी है''। सब ने कहा हम उसके लिए जो भी करना पड़ेगा वो करेंगे।

कुछ दिनों बाद एक रात को गजसिंह

और मीर खान रोहिण्डी कोठारी (परबतसर) के बुजुर्ग जागीरदार की हवेली पर पहुंचे। बुजुर्ग जागीरदार ने उनका स्वागत किया और बोला'' महाराज मैं तो आपके राज्य का छोटा सा जागीरदार हूं अगर कुछ काम होता तो मुझे बुला लिया होता मैं आपके दरबार में हाजिर हो जाता''। गजसिंह ने इस बुजुर्ग जागीरदार से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी। इसलिए उसने कहा ''आप बुजुर्ग भी है और मेरे गुरु भी है मैं आपका आदर करता हूं। लेकिन कुछ ऐसा काम था इसलिए आपको मिलने चला आया।'' बाद में गजसिंह ने उनको समस्या बताइए जो बादशाह शाहजहां ने खड़ी की थी और कहां की ''मीर खान की जान बिना वजह से खतरे में आ पड़ी है। इस समस्या का समाधान कैसे किया जाए? । अपनी कॉम की वीरता के दिखाने के लिए कौन ऐसा क्षत्रिय है जो अपने प्राण न्यौछावर कर दे।'' तब जगीरदार ने कहा कि, ''इस में कौन सी बड़ी बात है। आप सही जगह पर आए हैं महाराज मेरे दोनों बेटे ऐसा पराक्रम करने के लिए सक्षम है। लेकिन थोड़ी देर रुको मैं क्षत्रियानी से बात करके आता हूं।'' तब गजसिंह को लगा कि क्षत्रियानि को पूछने के लिए गए इससे क्या बात होगी। यहां बात नहीं बनेंगी। फिर भी वह उन लोगों की बात सुनने गया और दीवार पर कान रखे और अंदर की बात सुनी तो उनकी बात सुनके उसका सीना एकदम से चौड़ा हो गया। जागीदार की ओर उसका आदर और बढ़ गया मन ही मन बोले ''शाबाश क्षत्रिय, शाबाश।''

असल अंदर कमरे में जाकर जब जागीरदार ने क्षत्रियानी से कहा की ऐसी ऐसी बातें दिल्ली दरबार में हुई है और वह समस्या या समाधान के लिए हमारे घर पे गजसिंह पधारे हैं और बाहर उत्तर का इंतजार

करके खड़े हैं। क्षत्रियाणी ने कहा ''आपने क्या कहा'' वह बोला ''मैंने कह दिया कि हमारे दोनों बेटे यह पराक्रम कर सकते हैं'' ''तो फिर उसमें मुझे पूछने की क्या जरूरत थी।'' ''मैंने तो कह दिया कि हमारे दोनों बेटे इस पराक्रम के लिए तैयार है। लेकिन तुमने उसको अपना दूध पिलाया है तो तुमको ज्यादा मालूम होगा इस बारे में।'' ''वैसे तो मेरे दोनों बेटे सक्षम हैं लेकीन जब बड़ा बेटा तोगाजी का जन्म हुआ था तो हमारे पास सब कुछ था इसलिए मैंने उसको बड़े लाड प्यार से अपना दूध पिलाया है। अगर वो जाएगा तो मुझे मालूम है कि वह बिना सर दो-तीन गांवों तक लड़ सकता है और छोटा बेटा पैदा हुआ तब हमारी स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी इसलिए छोटे बेटे को मैं बड़े बेटे जैसे लाड प्यार और दूध नहीं पिला सकी। लेकिन मुझे यकीन है की वह बिना सर का भी पूरे गांव के अंदर लड़ सकता है।'' तब बाहर आकर उसने गजसिंह को कहा कि ''मेरे बड़े बेटे तोगाज़ी को आप ले जा सकते हैं। वही आपकी समस्या का समाधान कर सकेगा।'' क्षत्रियों ने तोगाजी की बहादुरी और अपनी कोम के लिए सिर्फ वीरता साबित करने के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने की बात पर बहुत खुश हुए और तोगाजी को बार-बार धन्यवाद देने लगे। वो सब लोग वहां से दिल्ली जाने के लिए रवाना होने वाले थे तब मीर खान ने कहा कि ''मैंने बादशाह को दो बात का वचन दिया है। एक बात तो तय हो गई की तोगाजी बिना सर के लड़ेंगे और मुझे भी पूरा भरोसा है उनकी वीरता पर। लेकिन दूसरी बात का क्या है जो मैंने कहा था कि क्षत्रियानी ऐसे बिना सर के लड़ते राजपूत राजपूत वीर योद्धा का सर गोद में लेकर सती हो जाती है।'' सब लोग थोड़ा सोचने लगे कि मीर खान की वह बात ही सही है क्योंकि तोगाजी सिर्फ २२ साल का है और उनकी तो अभी शादी भी नहीं हुई। करे तो क्या करें ? तब गजसिंह के साथ ओसिया के भाई सरदार बोले, ''मैं अपनी बेटी का ब्याह करवाऊंगा तोगाजी से।''

वहां पर ही तोगाजी की शादी रचाई गई और सब लोग दिल्ली रवाना हुए। पहले से ही बादशाह को सूचना दी गई थी कि आपका सवाल का जवाब मिल गया है और साबित करने के लिए हम आ रहे हैं आप दरबार लगवाओ।

नियत समय पर सब लोग जब दिल्ली पहुंचे तो वहां बड़े से युद्ध मैदान जैसी जगह पर बादशाह शाहजहां दरबार लगाकर अपने शासन पर बिराजमान था। और दिल्ली के हजारों लोग यह पराक्रम देखने के लिए इक्कट्ठे हुए थे और सबके मन में एक ही सवाल था क्या होगा। जब वीर योद्धा तोगाजी ने मैदान में पैर रखे तो वहां पर इक्कट्ठे हुए लोग उनको देखने के लिए व्याकुल हो गए थे। सब ने अपने-अपने स्थान ले लिए और बीच में मैदान में वीर तोगाजी दोनों हाथों में तलवार लेकर खड़े थे। बादशाह ने यह देखा तो उसने कहा, ''मीर खान यह तो बालक जैसा दिख रहा है क्या इसका शरीर बिना सर लड़ेगा ?'' मीर खान ने बताया जहांपनाह, ''आप हुकुम करो।'' तब बादशाह ने जल्लाद को कहा कि ''इस लड़के का सर काट लो मुझे देखना है कि बिना सर का कैसा लड़ेगा''। तब दरबार में बैठे गजसिंह ने कहा की, ''यह तो अन्याय हैं। राजपूत की वीरता देखना है तो उसके साथ युद्ध करने के लिए पहले सैनिकों को तो भेजो। तब आपको पता चलेगा वीरता का।'' बादशाहने बात मान ली और उसने सोचा कि यह बालक के लिए तो मेरे दश सैनिक काफी हो जाएंगे। फिर भी उसने बीस सैनिकों को वीर तोगाजी के साथ लड़ने के लिए भेजा। जब सैनिको को अपनी ओर आते हुए देखा तो वीर तेजाजी की आंखें लाल हो गई और उनके शरीर में मानो के बिजली दौड़ गई। कुछ ही मिनट में उसने लड़ाई करने आए हुए २० सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। अब बादशाह ने और बीस सैनीको को भेजा उनका भी यही हाल हुआ। बादशाह वीर तोगाजी का ऐसा शौर्य देखकर हैरान हो गया। अब उसने ६० और सैनिको को लड़ने के लिए भेजें इसमें से ४० को वीर तोगाजी ने मार दिया। सिर्फ बीस बचे थे। तब शाहजहां चिल्लाया ''उसको सर में गोली मार दो वरना यह मेरा पूरे सैन्य को मार देगा।'' तब बादशाह के बाजू में खड़े हुए एक सैनिक ने तोगाजी सर में गोली मार दी। फिर भी वीर तोगाजी ने पुरे मैदान में एक चक्कर लगाया। तब पिछे से आ के एक सैनिक ने वीर तोगाजी का सर काट लिया। लेकिन उसके बाद जो हुआ उसको देख कर वहां ईकठ्ठे हुए लोगों का होश उड़ गया। बादशाह गुस्से से पागल हो गया वह सोच भी नहीं सकता था ऐसा भी होता है बिना सर के वीर तोगाजी ने दोनों हाथों में तलवार ले के वहां खड़ी हुई बादशाह की फौज पर टूट पड़ा

इतिहास थोड़ा अलग हो सकता है लेकिन ऐसी पराक्रम गाथाओं में कोई फर्क नहीं पड़ता है । वीर तोगाजी जैसे अनेक वीर योद्धा ओ हमारे हिंदुस्तान में हो गए लेकिन हमारे पढ़ने में ऐसे वीरों के पराक्रमों के बारे में हमें नहीं बताया गया, ज्यादातर मुगलों के बारे में बताया गया यह हमारी कमनशीबी है । हमारे इतिहास के पन्नों में दर्ज हुए ऐसे वीर योद्धाओं के पराक्रमों को उजागर करना जरूरी है । जिससे हमारे बच्चों या भविष्य की पीढी को मालूम पड़े कि हमारे देश में कैसे कैसे वीर योद्धाओ अपने देश, अपने राज्य, अपने समाज, अपनी कोम की खातिर अपने प्राणों की हंसते हंसते आहूति दे दी थी ।

और इतिहास में ऐसा लिखा गया है करीबन ५०० मुगल सैनिकों को उसने मौत के घाट उतार दिया था । तब बादशाह गुस्से से बेकाबू हो गया और चिल्लाने लगा और बोला की, ''उसको रोको नहीं तो वो मुझे भी मार देगा ।'' तब किसी ने बताया कि जहांपनाह किसी ब्राह्मण या पंडित को बुला के वीर तोगाजी के बिना सर के शरीर पे पवित्र गंगाजल छिड़काव करो । तब बादशाह ने विद्धान ब्राह्मण द्धारा वीर तोगाजी के बिना सर के धड़ पर वेदों के मंत्रोच्चार के साथ पवित्र गंगा जल का छंटकाव किया तब उसका धड़ शांत हुआ और जमीन पर जा गिरा (यहां एक बात कि जरूर नौंध लेनी चाहिए के जब वीर तोगाजी का बिना सर के शरीर पे जब पंडित पवित्र गंगाजल का छंटकाव करने को आगे बढ़ा तब वीर तोगाजी ने उस पर तलवार से वार नहीं किया क्योंकि राजपूतों/क्षत्रियों ब्राह्मण और गौ माता के रक्षक होते हैं और यह गुण उसके लहू में होता है । इसलिए बिना सर के शरीर को यह मालुम होता है के सामने कौन खड़ा है ।)

इतिहास में आगे ऐसा भी बताया गया है कि की शाहजहां ने वीर तोगाजी का पराक्रम देखकर उसके शरीर को अपने ही इक्के में मान सम्मान के साथ रखकर तोगाजी के शरीर की राह देखकर वहां खड़ी क्षत्रियाणी के पास पहुंचाया और बाद में वहां पर क्षत्रियाणी वीर तोगाजी का सर अपनी गोद में लेकर मां भगवतीका नारा लगाकर पावन अग्नि में सती हो गई ।

बाद में बादशाह ने भी माना और मीर खान को कहा कि, ''आपकी बात सही है राजपूत,क्षत्रियों की ऐसी वीरता और शौर्य का प्रदर्शन करना वह हमारे मुगल सैनिकों के बस में नहीं है । हमारे खान की बैठकों से दो बैठक उमरावों की ज्यादा है वो सही है ।''

नोंध:: इतिहास में इस पराक्रम के बारे में थोड़ा अलग-अलग बताया गया है जैसे कि वह पराक्रम कथा में वीर तोगाजी के छोटे भाई भी शामिल थे । जब तोगाजी दिल्ली पहुंचे तो बादशाह ने उनका मान सम्मान के साथ स्वागत किया और बाद में महल में ही उनको मौत के घाट उतारने के लिए षड्यंत्र रचा था और महल में ही धोखे से उसका सर धड़ से अलग किया गया था और बाद में वीर तोगाजी का बिना सर का धड़ लड़ा था और मुगल सेना के ५०० सैनिकों को मार डाला था ।

इतिहास थोड़ा अलग हो सकता है लेकिन ऐसी पराक्रम गाथाओं में कोई फर्क नहीं पड़ता है । वीर तोगाजी जैसे अनेक वीर योद्धा ओ हमारे हिंदुस्तान में हो गए लेकिन हमारे पढ़ने में ऐसे वीरों के पराक्रमों के बारे में हमें नहीं बताया गया, ज्यादातर मुगलों के बारे में बताया गया यह हमारी कमनशीबी है । हमारे इतिहास के पन्नों में दर्ज हुए ऐसे वीर योद्धाओं के पराक्रमों को उजागर करना जरूरी है । जिससे हमारे बच्चों या भविष्य की पीढी को मालूम पड़े कि हमारे देश में कैसे कैसे वीर योद्धाओ अपने देश, अपने राज्य, अपने समाज, अपनी कोम की खातिर अपने प्राणों की हंसते हंसते आहूति दे दी थी ।

अरे, हमारे हिंदुस्तान में तो ऐसे भी वीर योद्धा हो गए हैं जिसने गौ माता को विधार्मियो के हाथो से बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी है । ऐसे वीर योद्धाओ को इतिहास के पन्नों में हमेशा याद किया जाता है ।

स्मार्टफोन के बाद अब स्मार्ट होम

१४० अबज डॉलर का बाजार

टेक्नोट्रेन्ड

◆ तेज जोषी ◆

आज के आधुनिक युग में अनेकों नए-नए आविष्कारों से मानवी की जीवन शैली आधुनिक और सवलत भरी हो गई है ।आज के युग में एक से बढ़कर एक नए-नए अविष्कार से मानवी का जीवन एकदम सरल और आरामदायक हो गया है । अभी थोडे साल पहले फ्रिज,ऐसी, ओवन, वोशिंग मशीन, आटे की चक्की जैसे ऑटोमेटिक साधनो किचन में आने से गृहिणीओ को कम मेहनत से काम होने से उनका जीवन सरल हो गया है ।

थोड़े सालों से मार्केट में मोबाइल फोन में स्मार्टफोन आने लगे हैं । इसमें कई फीचर्स होते हैं जो खरीदने वालों को आधुनिक टेक्नोलॉजी का एहसास कराते हैं । बाद में टीवी में भी स्मार्ट टीवी आने लगे अब और एक नया कन्सेप्ट आया है स्मार्ट होम का । आपने इसके बारे में शायद सुना नहीं होगा या तो कम सुना होगा । तो फिर चलो आज हम आपको स्मार्टहोम के बारे में बताते हैं ।

आपके फोन में मैसेज आता है और इसमें लिखा होता है कि आपके घर में दूसरे बेडरूम की पहली खिड़की का शीशा टूट गया है तो पहली नजर में यह थोड़ा अजीब और नवीनतम लगता है । क्योंकि ऐसे शीशे टूटने से कोई हमें बताए तब हमें मालूम पड़ेगा या हम खुद उधर जाएंगे तब मालूम पड़ेगा । खीडकी थोड़ी सामने से बताएगी कि मेरा शीशा टूट गया है, उसको बदल दो ।

लेकिन अब यह सब बातें पूरानी हो गई है । अब हालात बदल गए हैं । पश्चिमि देशों में तो तेज रफ्तार से अब स्मार्ट होम बन रहे हैं । स्मार्ट होम यानी कि ऐसे घर जो आगे लिखा है ऐसा कुछ हो तो आपको सामने से बताए कि आपको इसका रिपेयरिंग करना है । तापमान भी अपने आप नियंत्रित करते हैं । ज्यादा ठंडी हो तो तापमान बढ़ा देता है । ज्यादा गर्मी हो तो तापमान थोड़ा कम कर देते हैं । शाम को जब अंधेरा होने लगता है तो घर में अपने आप लाइट चालू करें । जो आपको करना चाहिए वह अब ऐसे स्मार्ट होम करेगा और मकान मालिक की मेहनत कम कर देगा ।

वैसे देखा जाए तो स्मार्ट होम हमारे लिए एकदम नए नहीं है । क्योंकि जब टीवी का रिमोट खो जाता है तो हम अपने मोबाइल में से एप के जरिए टीवी को ऑपरेट कर सकते हैं । वह भी स्मार्ट होम का ही एक भाग है । घर में लगे हुए सीसीटीवी कैमरा से हम अपने घर से कितने भी दूर हो वहां होती हर एक हरकत को हम अपने मोबाइल से देख सकते हैं । यह भी स्मार्ट होम का ही एक दृष्टांत है । ऐसी सवलते घर के कोने कोने, कमरे कमरे, दरवाजे से लेकर अंतिम खिड़की तक और फलोर छजा तक के काम अपने आप करने लगे ऐसा घर । मतलब स्मार्ट होम ।

वैश्विक मार्केट रिसर्च एजेंसी 'यूनिवडॉट्स मार्केट इनसाइट' रिपोर्ट मुताबिक साल २०२४- २५ दौरान स्मार्ट होम का वार्षिक बाजार १४० अबज डोलर का हो जाएगा । अगर हमको यह आंकड़े में दिलचस्पी न हो तो भी हमें अपने घर की सुरक्षा के लिए दिलचस्पी जरूर रहेगी । हमें स्मार्ट होम किसको कहते हैं उसकी समझ हमें ना हो तो भी हम अपने घर को आहिस्ता आहिस्ता स्मार्ट होम बना रहे हैं ।स्मार्ट होम दूसरा कुछ नहीं है, उपयोग में आने वाले इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस का स्मार्ट तरीके से बढ़ रहा उपयोग । और यह सब डिवाइस अपने मोबाइल के साथ कनेक्ट होने से हम मोबाइल के जरिए पूरे घर

को मैनेज कर सकते हैं। घर को मोबाइल के साथ कनेक्ट करने के लिए गूगल ने ''गूगल होम'' नाम का एक ऐप बना दिया है। कई मोबाइल में ऐसे ऐप पहले से ही इंस्टॉल होते हैं वह ऐप खोल कर देखेंगे तो मालूम पड़ेगा की घर के कई डिवाइस हम अपने मोबाइल से कनेक्ट कर सकते हैं।

टेक्नोलॉजी कंपनीयो ने तो कब की स्मार्ट होम की सवलते देना शुरू कर दिया है। लेकिन यहां पर समस्या यह है कि ज्यादातर कंपनियों की सर्विस पूरे घर के लिए नहीं होती इसलिए वह हमको स्मार्ट नहीं लगता। कोई कंपनी कहे कि हमारा एसी खरीद करो तो वह एसी आपके घर के तापमान को ऑटोमेटिक तरीके से ज्यादा- कम कर सकता है। ऐसे एसी को 'स्मार्ट एसी' कहते हैं। घर में ऐसे स्मार्ट डिवाइस की संख्या बढ़ने से वो घर 'स्मार्ट होम' हो जाएगा।

वैसे तो फ्रिज, एसी,वाशिंग मशीन घर में आये तब से घर स्मार्ट होम बनने लगे हैं। लेकिन यह सब साधनों चालू बंद करने के लिए कम से कम एक बार तो खड़ा होना पड़ता था। १९७५ में नई कम्युनिकेशन मेथड डेवलप हुई जिसका नाम है, x१०। जीसके कारण दूसरे भी साधनों को कंट्रोल करने का संभावित हुआ। नेदरलैंड की 'पिको इलेक्ट्रॉनिक्स' कंपनी ने x१० प्रोटोकॉल की शोध की थी, जो कोई भी डिवाइस में उपयोग में लिया जा सकता था। जिस से घर के एक से ज्यादा डिवाइस को एक ही जगह से कनेक्ट करने का संभव बना। इसी तरह ही आज के स्मार्ट होम के शुरुआत करीबन ५० साल पहले ही हो गई थी लेकिन अब उसका सही समय आ गया है।

वर्तमान समय में जब घर बन रहा हो तब ही इंटीरियर डिजाइनर कहां पे एसी रखेंगे, कहां कैसा पर्दा लगेगा और कहां पे स्विच बोर्ड आएगा उसकी सलाह देते हैं। लेकिन अब इंटीरियर डिजाइनर को अपनी सेवाओं में स्मार्ट होम कांसेप्ट को शामिल करना होगा नहीं तो उसको कोई पूछने वाला नहीं होगा, क्योंकि अब स्मार्ट होम कन्सेप्ट तेजी से बढ़ रहा है।

यूरोपीय देशों और अमेरिका ने तो स्मार्ट होम का कन्सेप्ट पूर्ण रूप से अपना लिया है। ईसलिए वहां नए घर बन रहे हैं उसमें से ज्यादातर घर स्मार्ट होम ही होते हैं। बच्चे हो, बुड्ढे हो या फिर जिस घर में दिव्यांग रहते हो वहां पे यह टेक्नोलॉजी से सज्ज घर बहुत ही उपयोगी साबित हो रहे हैं। दूर से ही ऐसे घर को और घर में रहने वालों का लगातार ख्याल रखा जा सकता है। अगर देखें तो साल २०२३ के अंत तक पूरे विश्व में ३५ करोड़ से ज्यादा स्मार्ट होम रजिस्टर किए गए थे। नेदरलैंड के एमस्टर्ड स्थित 'द एज' नाम का बिल्डिंग दुनिया के सबसे स्मार्ट और सस्टेनेबल बिल्डिंग के रूप में विख्यात हुआ है। यहां पर सब कार्यवाही इंटरनेट के जरिए होती है और इसके लिए १५ मंजिल के यह बिल्डिंग में कुल मिलाकर २८,००० सेंसर लगाए गए हैं। लगातार सूर्य प्रकाश मिलता रहे इसलिए हर एक बैठक खिड़की से ७ फीट के अंतर में ही आ जाए इस रूप से बनाई गई है। रात को बिल्डिंग की सिक्योरिटी का काम भी कोई आदमी नहीं रोबोट करता है। विश्व में ऐसी बिल्डिंगें तेजी से बढ़ रही हैं।

स्मार्ट होम के लिए क्या चाहिए ?

वैसे तो घर में एक के बाद एक डिवाइस को फिट करने से घर स्मार्ट होम बन जाता है लेकिन अगर कोई घर स्मार्ट होम बने तो इसके पीछे तीन टेक्नोलॉजी कार्य करती है।

(१) <u>**इंटरनेट ऑफ थिंग्स:**</u> एक से ज्यादा उपकरणों जैसे की, फ्रिज, टीवी, एसी वगैरा इंटरनेट के साथ जुड़े हुए हो ऐसी स्थिति को इंटरनेट ऑफ थिंग्स कहते हैं। अभी हम ऐसे ही युग में जी रहे हैं।

(२) <u>**क्लाउड कंप्यूटिंग:**</u> हम कहीं भी हो लेकिन घर की स्थिति पर नजर रखने के लिए डाटा की लेनदेन जरूरी है। ऐसे डाटा हमको क्लाउड कंप्यूटिंग के जरिए मिल सकते हैं।

(३) <u>**वायरलेस कनेक्टिविटी:**</u> स्मार्ट होम बनाने के लिए घर के कई डिवाइस को इंटरनेट के साथ कनेक्ट करना पड़ता है। इसके लिए वायरलेस कनेक्टिविटी चाहिए नहीं तो घर में जहां देखो वहा वायर ही नजर आएंगे।

स्मार्ट होम बनाओ या ना बनाओ लेकिन लोगों को अपने घर को सुरक्षित बनाने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है, वो है कैमरा। २०२३ के जनवरी से मार्च दौरान सुरक्षा के लिए उपयोग में आने वाले ऐसे कैमरा १५०० से २००० रुपया में मिलने की वजह से लोग भारी संख्या में इसकी खरीदारी कर रहे हैं।

स्मार्ट होम में क्या होता है?

अपने आप कम-ज्यादा, चालू-बंद होती लाइट। घर में कुछ भी अनजान हलचल होने से स्मार्टफोन में एलर्ट मिलता है। रिमोट से चलने वाले उपकरणों घर से निकल जाने के बाद याद आए तो, पानी का नल भी बंद करना रह गया हो तो वह भी बाहर से ही बंद कर सकते हैं। घर में एंटर होने पे चाबी ना हो

(Contnue on page No.31)

सावधान! नदियों और समंदर के लिए हानिकर्ता धूम्रपान

रेड अेलर्ट

◆ विपुल ब्रह्मभट्ट ◆

सिगरेट, बीडी,तंबाकू, शराब हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है फिर भी लोग उसका आराम से निष्फिक्र सेवन कर रहे हैं । हानिकारक है इसी चेतावनी तो धूम्रपान करने वालों ने इसके प्रोडक्ट के बॉक्स पर पढी ही होगी, धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और इससे कैंसर हो सकता है और मुंह के कैंसर का एक बड़ा फोटो भी उस पर पाया जाता है । लेकिन इसके आदती लोगों को उसकी कोई परवाह नहीं है । और फिर भी लंबे समय के उसके सेवन के बाद कई लोग कैंसर से पीड़ित हो जाते हैं, तब डॉक्टर की सलाह के बाद ऐसे लोग इसका सेवन मजबूरी से बंद करते हैं । थिएटर में पर्दे पर भी ऐसे विज्ञापन दिखाई पड़ते हैं कि धूम्रपान शरीर के लिए हानिकारक है । इसका सेवन कैंसर को आमंत्रित करता है । लेकिन हिंदी सिनेमा के एक गीत 'हर फिक्र को धुएं में उडाता जा' की तरह बेपरवाह धूम्रपान करते हैं ।

लेकिन यह प्रदूषण, अब मां प्रकृति की गोद तक आ पहुंचा है । हाल में ही जाहिर कीए गए एक रिपोर्ट से पता चला है कि फेंके हुए ४० % सिगरेट के खुत्थे नदिया और समंदर को प्रदूषित कर रहे हैं । सान डिएगो टेस्ट यूनिवर्सिटी ने एक रिपोर्ट में बताया था कि एक सिगरेट के धूम्रपान करने के बाद इसके खुत्थे से निकलते रसायनों १ लीटर पानी की बाल्टी में रही आधी मछलियों को मारने के लिए सक्षम है ।

एक अंदाज के मुताबिक हर साल करीबन ४.५० लाख करोड़ सिगरेट के खुत्थे खुले में फेंकने में आते हैं, जो स्वास्थ्य के साथ पर्यावरण के लिए भी जोखमी है । जब ऐसे सिगरेट के खुत्थे फेंके जाते हैं तब वह हल्के और छोटे होने से पानी के निकाल के लिए बनाए गए नाले से होते हुए और सरलता से नदियां, तालाबों और जलाशयों तक पहुंचते हैं । संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) ने सिगरेट से पैदा होता कचरा और उसकी होती असरों को बारे में एक नया अहवाल जाहीर किया है । वैश्विक स्तर पर फेंके गए सिगरेट के ४० % खुत्थे नदिया और महासागरों में प्रदूषण फैलाते हैं । सिगरेट के इस खुत्थे में सामान्यतः सेल्यूलोज एसीटेट से बना हुआ प्लास्टिक फिल्टर होता है, जो बायो डिग्रेडेबल के बदले फोटो डिग्रेडेबल होते हैं ।

एक प्रतिष्ठित कंपनी के आंक के मुताबिक एक सिगरेट के खुत्थे के नष्ट होने में १५ साल जितना समय लग सकता है, यह प्रक्रिया वहां पर नहीं रुकती । इस खुत्थे के नष्ट होने की प्रक्रिया दौरान हजारों प्लास्टिक माइक्रो फाइबर्स पैदा होते हैं । वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन की बात माने तो इस तंबाकू पैदाइश के साथ जुड़े हुए कचरे में अंदाजित ७,००० प्रकार के जहरीले रसायन होते हैं, जो उसके बच गए कचरे के साथ वातावरण में मिल जाते हैं ।

हाल में ही एक संशोधन से बाहर आया है कि एक सिगरेट का खुत्था करीबन ४० लीटर पानी को दूषित कर सकता है । कचरे का जत्था और सिगरेट के खुत्थे के सरासरी

वजन के मुताबिक रिपोर्ट का अंदाज है की सालाना ३.५ मिलियन टन से ज्यादा प्लास्टिक तंबाकू फिल्टर वैश्विक जल मार्ग में मिल रहे हैं। ऐसी हालत में अगर हम १५ साल का हिसाब करें तो ५३ लाख टन सिगरेट के खुत्थे पानी के प्रवाह में हो सकते हैं। नदिया और समंदर में इसकी असर प्लास्टिक प्रदूषण से बहुत ही ज्यादा मात्रा में है। ऐसा अढाज़ लगाया जाता है कि महासागरों और नदियों में देखने मिलते सिगरेट के खुत्थे सालाना ७२,०००,०००,०००,०००,००० (७२ क्वाड्रिलियन) पानी को दूषित कर सकते हैं। सिर्फ जलाशयों और पानी के प्रदूषण तक यह सीमित नहीं रहता। यह प्रदूषण वन्य जीव और जलचरों के लिए मौत का पैगाम लेकर आते हैं। समुद्र में रहे मछलियों, पंछियों और व्हेल समेत समुद्री प्रजातियां खुराक लेते समय अनजाने में ही ऐसे सिगरेट के खुत्थे को निगल जाते हैं, जो ऐसे जीव के स्वास्थ्य को घातक नुकसान पहुंचा सकता है। जो ऐसे जीव के मृत्यु का कारण भी बन सकता है। ऐसे सिगरेट के खुत्थे और टुकड़े से सालाना अंदाजित ७६६ मिलियन किलोग्राम हानिकर्ता कचरा पैदा हो रहा है। एक अध्ययन में ऐसा भी सामने आया है कि ऐसे सिगरेट के खुत्थे फूड चेन में बहुत ही ज्यादा मात्रा में धातुओं की प्रवेश की वजह बन रहा है, जो भविष्य में स्वास्थ्य के लिए संकट बन सकता है। सिगरेट सिर्फ लोगों के स्वास्थ्य पर ही सीधी असर ना करते हुए उसकी वजह से पैदा होता प्लास्टिक और हानिकर्ता कचरा भी मृत्यु का कारण बन सकता है।

वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन के मुताबिक तंबाकू उद्योग सालाना करीबन २ लाख हेक्टर जमीन का सफाया कर देता है, जिसके कारण ६० करोड़ पेड़ों काटे जाते हैं। यह उद्योग में सालाना अंदाजित २२०० करोड़ टन पानी का वपराश रहा है और अंदाजित ८४ मिलियन टन कार्बन डायोक्साइड का उत्पादन करता है, जो वातावरण में परिवर्तन करने में महतम असर कर रहा है। एक अंढाज ऐसा भी है कि इस सिगरेट के खुत्थे से सालाना ३५,००० टन से ज्यादा प्लास्टिक कचरा पैदा हो रहा है।

एक सिगरेट उस के जीवन काल में मिथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और दूसरे वायु प्रदूषकों के साथ १४ ग्राम कार्बन डायोक्साइड का उत्सर्जन करता है। उसके अलावा हमारे जैव विविधता पर उसकी बहुत ही बुरी असर हो रही है। २०१७-१८ में इंग्लैंड के स्थाई पर्यावरण गुणवत्ता रिपोर्ट में बताया गया है कि रोजाना धूम्रपान करने वाले ५२% लोगों ने सिगरेट को नाले में फेंकना स्वीकारा था और ३९% धूम्रपान करने वालों ने अंतिम महीने में स्वीकारा है कि सिगरेट के खुत्थे नाले में फेंकने चाहिए। यह मानसिकता, अहवाल और संशोधन पर्यावरण प्रदूषण की जड़े बता रहा है।

यह सब आंकड़े देखते हुए संसोधको को और पर्यावरणकर्ताए चिंचित हो गए हैं। वैश्विक स्तर पर इस सिगरेट फिल्टर्स की नकारात्मक असर को ध्यान में लेते हुए उस पर प्रतिबंध लगाना जरूरी है।

यह बात तो सही है कि सिगरेट में इस फिल्टर का उपयोग करने पर प्रतिबंध लगाने से सिर्फ लोगों को ही नहीं लेकिन पर्यावरण को भी स्वस्थ रखने के लिए एक बेहद जरूरी कदम होगा।

स्मार्टफोन के बाद अब स्मार्ट होम

(Contnue From page No.29)

तापमान को कम ज्यादा करने की सवलत, घर के उपकरणों को चालू बंद करने का टाइम टेबल बना सकते हैं। जैसे की तापमान १० डिग्री पर पहुंचे तब हीटर अपने आप ही चालू हो जाता है। पूरे घर की स्थिति पर नजर रख सकते हैं। कोई अनजान व्यक्ति दाखिल हुए तो उनकी जानकारी मिल जाए और अलार्म+साइरन की सुविधा होती है। कार पार्किंग के दरवाजे को लॉक करने की सवलत मिलती है। घर में रहे कोई भी शीशा टूटे तो उसकी जान कारी मिल जाती है।

स्मार्ट होम के फायदे

घर की सलामति बढ़ सकती है। क्योंकि हम घर से दूर होकर भी अपने घर पर नजर रख सकते हैं। सवलते ज्यादा सरल हो जाती है। हम अपनी अनुकूलता से उपकरणों को रख सकते हैं। ऊर्जा-पावर का उपयोग कम हो जाता है। समय और शक्ति की बचत होती है।

स्मार्ट होम के गैर फायदे

अगर घर में कोई भी एक डिवाइस हेक हो जाए तो पूरे घर को खतरा होता है। अगर पावरफुल इंटरनेट कनेक्शन ना हो तो नेटवर्क समस्या हो तब घर के कई डिवाइस काम करने बंद हो जाते हैं। महेंगी बैक अप व्यवस्था बसानी पड़ती है। अलग-अलग सावलतो को एक ही स्मार्टफोन के साथ कनेक्ट करने का कार्य अभी कठिन है। अगर उसका उपयोग करने का ज्ञान ना हो तो कठिनाई पैदा हो सकती है। डेटा प्राइवेसी को नियंत्रण में नहीं रख सकते।

हाइपोग्लाइसीमिया यानि कि लो ब्लड शुगर

इस भागदौड़ वाली जिंदगी में मानवी अपने आपके स्वास्थ्य के बारे में सोचना ही भूल गया है। प्रकृति के विरुद्ध खाना, पीना और सोने से स्वास्थ्य पर बूरी असर होती है। आधुनिक जीवन शैली से शरीर में कई प्रकार के बीमारियां उत्पन्न होती है। डायबिटीस कंट्रोल में ना रहने से लंबे समय पर हृदय रोग, पैरालिसिस का अटैक, किडनी की तकलीफ, पैरों और आंखों के परदे पर असर हो सकती है। किसी वजह से डायबिटीस को नियंत्रण में रखना जरूरी है। उसके इलावा अगर डायबिटीस अचानक से बढ़ जाए तो किटोसिडोसिस या हाइपर ऑस्मोलर, कोमा जैसी तकलीफ हो सकती है। लेकिन इसके विरुद्ध कई बार लहू में शुगर अचानक से कम हो जाता है जिनको हाइपोग्लाइसीमिया यानी की लो ब्लड शुगर के नाम से जाना जाता है। सामान्यतः डायबिटीस की दवाइयां या इंसुलिन सही मात्रा में लिया हो लेकिन अगर सही मात्रा में खुराक ना लिया हो, आवश्यकता से ज्यादा व्यायाम हो गई हो, या फिर आवश्यक मात्रा से ज्यादा दवा का डोज लिया गया हो तब ऐसा हो सकता है। इस बारे में दर्दी या उसके परिवार जनों को जानना बहुत ही आवश्यक है। चलो, तो फिर विस्तृत रूप से जानते है हाइपोग्लाइसीमियाके बारे में।

हाइपोग्लाइसीमिया क्या है?

सामान्यतः हमारे लहू में ८० से १४०

मिलीग्राम शुगर होती है। अगर लहू में ग्लूकोस 70 mg/dl से भी कम हो, हाइपोग्लाइसीमिया की असर हो और थोड़ा मीठा खाने से जल्दी संपूर्ण राहत मिलती है तो तब इस प्रक्रिया को हाइपोग्लाइसीमिया के नाम से जाना जाता है। अगर लहू में ग्लूकोस करीबन ५० से भी ज्यादा काम हो जाता है तब उनको सीवर हाइपोग्लाइसीमिया कहा जाता है और उसमें

स्वास्थ्य

◆ योगेन्द्र पंड्या-राजकोट ◆

दर्दी को मिर्गी भी आ सकती है और वह मूर्छित भी हो सकता है।

हाइपोग्लाइसीमिया का आसार कैसे होते हैं?

आसार के बारे में देखे तो.... अचानक भूख लगना,पेट में घबराहट होना। सर दर्द, चक्कर आना, धड़कन बढ़ जाना। अचानक पसीना होना, कंपारी आना, घबराहट होना। आंख में अंधकार छा जाना, धुंधला दिखाई देना या डबल दिखाई देना। अगर शुगर ५० से ज्यादा काम हो जाती है तब बहुत ही चक्कर आना, विचित्र बर्ताव करना, मिर्गी पड़े या मूर्छित हो जाना।

हाइपोग्लाइसीमिया को कैसे रोका जा सकता है?

दवाई या इंसुलिन सही मात्रा में लेना और लेने के बाद समय पर सही मात्रा में खुराक लेना, अगर मेहनत और व्यायाम करना हो तो थोड़ा ज्यादा मात्रा में खुराक लेना, लहू में ग्लूकोस की समय पर नियमित जांच करवाते रहना, हो सके तो आल्कोहल से दूर रहना, कुछ प्रकार की एंटीबायोटिक और पेईन किलर से भी हाइपोग्लाइसीमिया हो सकता है इस बात का ख्याल रखें। परिवार के सदस्यों, दोस्तों और ऑफिस स्टाफ को हाइपोग्लाइसीमिया के आसार और तत्कालीन सारवार के बारे में जानकारी दो। हमेशा कोई भी प्रकार की मिट्ठी चीज पास में रखो, जैसे की ग्लूकोज टैबलेट या पिपरमेंट, चॉकलेट।

हाइपोग्लाइसीमिया किसको हो सकता है?

Type-1 डायाबीटीस के दर्दी को ईन्स्युलीन की वजह से बार-बार हाइपोग्लाइसीमिया का खतरा रहता है। उसके अलावा Type-2 डायाबीटीस के दर्दीओ अगर ईन्स्युलीन लेते हो सल्फोनाइलयुरीया या इस प्रकार की दवाईया ले ते हो एसे लोगो को भी हाइपोग्लाइसीमिया का खतरा रहता है Metformin और नई दवाईया जैसे की

SGLT-2 Inhibitor, Dpp4 Inhibitor, Pioglitazone से सामान्यत: हाइपोग्लाइसीमिया होता नहीं है ।

किन हालातो में हाइपोग्लाइसीमिया हो शकता है?

जब दवाईया, इन्स्युलीन के प्रमाण में खुराक कम लेने से, ज्यादा महेनत या व्यायाम करने से, आल्कोहोल का सेवन करने से, Levofloxacin जैसी एन्टीबायोटीक्स या कई बार पेईन किलर्स लीया हो, जब किडनी या लीवर डेमेज होवा हो ।

हाइपोग्लाइसीमिया से क्या खतरा हो सकता है?

कभी–कभी हाइपोग्लाइसीमिया होने से ह्रदय या दिमाग में असर हो सकता है । अगर हाइपोग्लाइसीमिया बहुत ही सीवर हो या लंबे समय तक रहे तब ह्रदय पर असर हो सकता है । जैसे की धड़कनें बहुत ही बढ़ जाना, ह्रदय की रफ्तार अनियमित हो जाती है, ह्रदय रोग का हमला आ सकता है, अचानक सांस फूल जाती है, अगर दिमाग पर असर होती है तब मिर्गी पड़ सकती है, दर्दी मूर्छित हो सकता है और कोमा में भी जा सकता है ।

अगर हाइपोग्लाइसीमिया हो तो उसका उपाय क्या है?

सबसे पहले अगर हो सके तो ग्लूकोमीटर से ग्लूकोज की जांच कर लो क्योंकि अगर शुगर की मात्रा ७० से कम हो तो हाइपोग्लाइसीमिया है ऐसा निश्चित तौर पर कह सकते हैं । अगर दर्दी सचेत अवस्था में हो तो उसको तत्कालीन १५ ग्राम यानी की तीन चम्मच ग्लूकोस एक

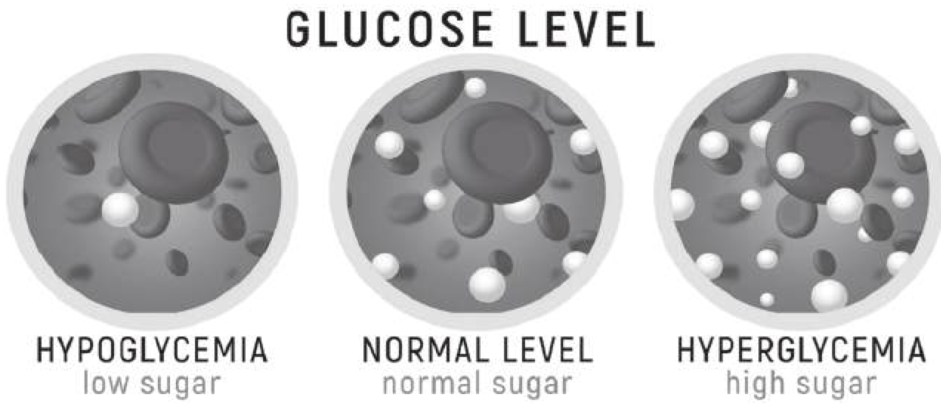

गिलास पानी में डालकर उसको दे देना चाहिए और उसके बाद कुछ मीठा खाने के लिए देना चाहिए । अगर ग्लूकोस ना हो तो तीन से चार चम्मच चीनी एक गिलास पानी में डालकर दे सकते हैं या फिर कोई भी मीठा सॉफ्ट ड्रिंक भी दे सकते हैं । उसके बाद फिर से ग्लूकोमीटर से ग्लूकोज की जांच करनी चाहिए अगर ग्लूकोज बिल्कुल नॉर्मल हो गया हो तो ऊपर बताई हुई प्रक्रिया फिर एक बार करनी चाहिए ।

फिर भी अगर ग्लूकोज की मात्रा नॉर्मल ना हो तो या दर्दी पूरी तरह से सचेत अवस्था में ना हो तो मुंह से देने के बजाय दर्दी को तत्कालीन नजदीकी अस्पताल में ले जाकर ग्लूकोज चढ़ाना आवश्यक है । इंसुलिन लेने वाले दर्दी जो घर में Glucagon का इंजेक्शन रखते हैं तो वह लेने से भी लहू में ग्लूकोज की मात्रा नॉर्मल हो जाती है । Glucagon इंजेक्शन इंसुलिन के जैसे ही चमड़ी से नीचे लेना होता है ।

अगर हाइपोग्लाइसीमिया हो तो उसकी जानकारी फैमिली डॉक्टर को जरूर से करो, शायद दवाइयां इंजेक्शन के डोज में तब्दीली करनी पड़े ।

लो शुगर के सब Symptoms हो लेकिन उस समय शुगर कम नहीं होती, नॉर्मल रहती है तो क्या इसको हम हाइपोग्लाइसीमिया कह सकते हैं?

अगर हाइपोग्लाइसीमिया के Symptoms हो लेकिन लहू में ग्लूकोज की मात्रा नॉर्मल हो तो उसे हाइपोग्लाइसीमिया नहीं कह सकते । कई लोग ऐसा मानते हैं कि मेरी शुगर नियमित रूप से २०० जैसी ही रहती है इसलिए अगर मेरी शुगर १२० हो तब मुझे कम होने का असर होगा ऐसी मान्यता गलत है । हाइपोग्लाइसीमिया के निदान के लिए ब्लड शुगर लो होना चाहिए मतलब के ७० से भी कम होना जरूरी है ।

अगर डायबिटीज ना हो तो लो शुगर हो सकती है?

सामान्यतः लो शुगर डायबिटीज के दर्दी और इसमें भी खास तौर पर इंसुलिन का या पहले बताया ऐसी दवाइयां लेते हो तब ही होता है । लेकिन अगर पेंक्रियास में किसी भी प्रकार की गांठ हो और इंसुलिन उसकी वजह से या अन्य कोई दूसरी कारण से ज्यादा मात्रा में बनता हो तब डायबिटीज ना होने से भी हाइपोग्लाइसीमिया हो सकता है । इसका निदान अगर डॉक्टर को आवश्यक लगे तो खास प्रकार की तपास करके हो सकता है ।

मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें

दोस्तों, पिछली बार के अंक में आपने देखा कि दाउद और उसके गुर्गो ने नकदी लूटने की योजना बनाई थी और उसमे वो सफल भी रहे थे। अब इब्राहीम ने दाऊद और सबीर की घर ले जा के खूब पिटाई की थी हो और दोनों को क्राइम ब्रांच को सौंप दिया था। अब आगे ....

डोगरी की तंग गलियों में सर्दियो का करारापन लिए गुनगुनी हवा बह रही थी। यहां मुंबई के एक बेहद बदनाम मोहले मे डोंगरी पुलीस स्टेशन की अनोखी, प्राचीन ईमारत किसी संत्री की तरफ खड़ी हुई है। वरिष्ठ पुलिस इंस्पेक्टर रणबीर लिखा अपनी डेस्क के सामने बैठा हुआ है।

आमतौर पर वह सैंड हर्स्ट रोड से गुजरती रेलों और सैंड हर्स्ट रोड स्टेशन के ठीक बाहर के स्मिथ हाउस से आती घरेलू आवाजों कि रोजमर्रा एकरसता के बीच सोता रहता था। लेकिन आज की इस दोपहर के तीसरे पहर में वरिष्ठ पुलिस इंस्पेक्टर लिखा के दिमाग में कुछ दूसरी चीजें चल रही थी। उसका ध्यान हेड कांस्टेबल दिलीप माने के शांत स्वर पर टिका हुआ था जो उस बेकरी कर्मचारी की शिकायत दर्ज कर रहा था जिसे अपने कर्ज की माहवार किस्त चुकाने में देर करने की वजह से स्थानीय पठान आसिफ खान द्वारा ईस कदर पिटा गया था कि वह मरते मरते बचा था। यह इस प्रकार की तीसरी शिकायत की जो उस दोपहर दर्ज कराई जा रही थी।

लिखा पठानों की ईस खालीस हिमाकत पर मन ही मन उबल रहा था, जो आम जनता और पुलिस दोनों की नजरों के सामने अपनी साजिशो को अंजाम दे रहे थे। साधारण लोग, कामगार, यहां तक कि व्यापारी भी पठानों द्वारा प्रताड़ित किए जाते थे या तो जायदाद सम्बन्धी झगड़ो में पैसे ऐठने को लेकर या पठानो के पैसे का सुत न चुका पाने की वजह से। डोंगरी

पुलिस स्टेशन पर यह उसका दूसरा कार्यकाल था जहां पर यह मुसीबत १९६० के बाद से और बढ़ती ही गई थी।

हालात पर संजीदगी से सोच विचार करते हुए यकायक उसे लगा कि इससे बाहर निकलने का एक तरीका हो सकता है। उसने कॉन्स्टेबल गोग्टे को बुलाया और उससे कहा कि वह पाकमोडिया स्ट्रीट पर स्थित मुसाफिरखाना में जाकर इब्राहिम कस्कर से मिले और उससे कहे की वह अपने सुविधानुसार आकर लिखा से मिले।

इब्राहिम भले ही महज़ एक हेड कांस्टेबल के तौर पर क्राइम ब्रांच से रिटायर हो गया था। लेकिन उस इलाके में उसका दबदबा किसी डीसीपी या किसी नामचीन सामाजिक कार्यकर्ता से ज्यादा था। और इब्राहिम खुद अपनी तरफ से जरूरतमंद और तंगहाल लोगों की, या जरुरत पड़ने पर अपने महकमे की मदद करने को तैयार रहता था।

इब्राहिम भाई पुलीस स्टेशन में आएं और लिखा के सामने की खुशी पर बैठ गए। यह लिखा था जिस पर आगन्तुक का रौब पड़ रहा था, जहां तक इब्राहिम का सवाल था, वह एकदम सामान्य था।

चिंता में डूबा हुआ लिखा जल्दी ही मुद्दे पर आ गया। ''इब्राहिम भाई ,यह क्या हो रहा है ? करीम मियां से बात करो। कुछ करना पड़ेगा। पठानो की हरकतें हद से बाहर हे अब।''

साफतौर पे परेशान दिखाई देते इस वरिष्ठ अफसर के सामने बैठे इब्राहिम कस्कर ने बेचैनी के साथ पहलू बदला और उसे दिलासा देने की कोशिश करते हुए कहा,'' साहब मैं बात करता हूं करीम भाई से। पहले भी कहा मैंने उनसे, वो बहुत कायदे के आदमी है.... वह मेरी बस कभी नहीं टालते... यह दूसरे लोग है जो उनकी भी नहीं सुनते हैं, मैं कुछ करता हूं.... जो बन सके।''

लिखा ने आश्वस्त होकर गहरी सांस छोड़ी, क्योंकि वह जानता था कि सब कुछ ठीक-ठाक हो जाएगा। सभी जानते थे कि अपने समुदाय में इब्राहिम की कितनी कद्र की जाती थी और सबसे ज्यादा खौफनाक पठानों के बीच भी उसका अच्छा खासा रुतबा था। जहां पुलिस के बाकी लोग पठानों से बरतने में कांपते थे, वही गरिमापूर्ण इब्राहिम कस्कर को पठान माफिया तक अपनी बराबरी के दर्जे पर रखकर देखते थे।

पठान माफिया गिरोह शहर में अपनी हुकूमत की बुलंदी पर थे। समाज पर अपनी निजी ताकत और पकड़ के चलते वे निश्चित थे कि उसके भीतर वे सुरक्षित और छिपे रह सकते हैं। वे जानते थे कि जब तक वे उस खौफनाक शैतानियत का माहौल कायम किए रह सकेंगे जिससे माफिया के किस्से गढ़े जाते हैं, तब तक वे शिखर पर बने रहेंगे। हुकूमत, हुक्मरान, पुलिस, कानून जैसी चीजें उनके लिए कोई मायने नहीं रखती थी। मायने रखते थे ताकत और पैसा। जैसा कि करीम लाला अक्षरस: कहा करता था,'' दुनिया को मुठ्ठी में रखना सीखो, हाथ खोलो तो सिर्फ पैसा लेने के लिए।''

लिखा जानता था कि इब्राहिम वह इंसान है जो अगर कहता है कि पठानो के रवैए को काबू में रखा जाएगा, तो उसके शब्दों पर भरोसा किया जा सकता है। इब्राहिम के एक जिक्र मात्र से पहले भी कई बार अमन बहाल रखने के मामले मे कारगर नतीजे सामने आ चुके थे, और अमन के यह दौर ठीक ऐसे समय पर कायम किए गए थे जब प्रशासन को शांत करने जरुरी था। यह प्रशासन, बेशक, वही था जो मोटे तौर पर विधानसभा में अपने जाने वाले अपने रुख के मुताबिक़ समय समय पर पुलिस की कोताही या उसके अत्याचार को लेके सवाल उठाता रहता था।

इसबार हालाकि लग रहा था कि इब्राहिम अपने संपर्क गवा चुका है। कई दोपहर आई और चली गई लेकिन पठानो के आतंक का कोई अंत दिखाई नहीं देता था। बल्कि वे कुछ ज्यादा ही उग्रता और बदसलूकी पर उतर आये थे। एक बार हमीद खान पठान को डोंगरी में तलब किया गया था। हमीद खान साढ़े छह फुट का एक दैत्य था और उस को आस पास के लोग इस डर से भाग खड़े होते थे थी वे कहीं उसके रास्ते में न आ जाए। अमीरजादा, आलमझेब और उनके भाई भी धीरे-धीरे इलाके में कुख्यात होते जा रहे थे और लोगों में वैसा ही खौफ पैदा करते थे।

मसलन, हामिद खान पुलीस स्टेशन मे आंधी कि तरह घुसा और उसने ऑफिस में रखी बड़ी भारी टेबल को महज अपने नंगे हाथों से तोड दिया; उसने टेबल को अपने सिर के उपर तक उठाया और फिर उसे फर्श पर पटक दिया। कॉन्स्टेबल और अफसरों समेत पुलिस का पुरा का पूरा जत्था बकबक

करते तमाशबीनों में सिमटकर रह गया।

लिखा समझ गया कि करीम लाला के साथ इब्राहिम की मुलाकातों के वांछित नतीजे नहीं निकल पा रहे हैं। उसे आशंका थी कि अगर कोई सख़्त कदम नहीं उठाए गए, और जल्दी नहीं उठाए गए, तो हालात बेकाबू हो जायेंगे। आख़िर वह अपनी रेवड और हलके का मुखिया था, और इस वक़्त वह दोनों ही स्तरों पर नाकारा साबित हो रहा था। अगर ऐसा ही चलता रहा तो बहुत देर नहीं लगेगी जब किसी और का ध्यान इस तरफ़ जाएगा और उसे बलि का बकरा बना दीया जाएगा। लेकिन, जब वहां बैठा हुआ इसी माथापच्ची में लगा हुआ था, तभी इकबाल नतीक ने खुशनुमा हवा के झोंके की तरह उसके कमरे में प्रवेश किया।

मोहम्मद इकबाल नतीक की कहानी, जो उस वक़्त ३५ की आयु का था, अपनी मेहनत से रातों रात बम्बई का एक कामयाब पत्रकार बनने की कहानी है। वह राजदार नामक एक उर्दू साप्ताहिक का संपादक और प्रकाशक हुआ करता था।

उस वक़्त तक पत्रकारिता हिंदुस्तान में या बम्बई में अपनी शैशव अवस्था में थी। हालांकि शहर में ऐसे छोटे और बड़े अखबारों की कमी नहीं थी जो किसी ख़ास वर्ग, क्षेत्र या इलाकों के लिए प्रकाशित होते थे। जैसी कि उस जैसे नौजवान महत्वाकांक्षी रिपोर्टरों की रवायत थी, नतीक ने भी जाने माने अखबारों में स्वतंत्र पत्रकार और कोलमिस्ट के रूप में काम करने के बाद १९६९ में २६ साल की आयु में अपना खुद का एक अख़बार शुरू किया।

दो साल में ही नतिक ने एक संघर्षरत पत्रकार से एक कामयाब अख़बार के मालिक और संपादक की हैसियत में पहुंचकर अपनी जिन्दगी की दिशा बदल डाली। अपने खुद के छापाखाने से लेकर एक ज़ोरदार सफ़ेद एंबेसेडर कार की सवारी तक, नतिक ने उठना शुरू किया और ऊंचे लोगों के बीच बराबरी से उठने बैठने लगा।

३५ साल की आयु का कॉमर्स का स्नातक उसका बेटा परवेज नतिक, जो आज शहर का एक कामयाब व्यवसायिक फोटोग्राफर है, कहता हैं कि ''दरअसल मेरे अब्बा हम लोगो को इस कदर एशोआराम मुहैया कराए हुए थे की उस समय छह बरस का होने के बावजूद मैं उनकी कार के अलावा और कोई सवारी पसन्द नहीं करता था, और प्लास्टिक की चप्पलें पहनने से मना कर देता था।''

राजदार, जो किसी भी कसौटी से रद्दी की टोकरी में फेंक देने लायक अख़बार था, अपनी सनसनी के लिए और स्थानीय दिग्गजों का भंडाफोड़ करने की अपनी आदत के लिए मशहूर अपनी तरह का अकेला अखबार था। जेजे अस्पताल के बीआईटी चाल के अपने छोटे से मकान की पहली मंज़िल से अपना कारोबार चलाते हुए नतिक ने स्थानीय पुलीस के साथ अच्छा तालमेल बैठा रखा था और इलाके के गुण्डों के दिमाग में डर बिठा रखा था; यह वह जुबान थी जो वे बोलते थे।

नतिक किसी भी वरिष्ठ पुलीस अफसर के कमरे में बिना ईत्तला दिए घुस सकता था और किसी भी माफिया की किसी भी बड़ी तोप के बारे में अनाप शनाप तरीके से लिख सकता था, इस तरह उसने एक ऐसे खरे पत्रकार की ख्याति हासिल कर ली थी जो किसी से भी नहीं डरता था, मौत से भी नहीं।

एक शख़्स जो खुले दिल से उसकी कद्र करता था और गर्व से उसके दोस्त होने का दावा करता था, वह था दाऊद। ''बंदे में दम है'', वह अपने दोस्तों को कहा करता था। नतिक और दाऊद दोनों ही रत्नागिरी से थे, लेकिन उनके बीच के लचीले रिश्ते का उनके जन्म स्थान के एक होने से कहीं बड़ा आधार वह जीवटता थी जो उन दोनों में थी। नतिक दाऊद को एक ऐसे छोकरे के रूप में देखता था जो उस ज़माने के उन महाबलियों के सामने दया का पात्र था, जिन में बासु दादा और हाजी मस्तान जैसे दौलतमंद और करीम लाला, तथा पठान माफिया के उभरते हुए जंगबाज अमीरजादा और आलमजेब जैसे शातीर शामिल थे।

नतिक लिखा के दरबार में अक्सर हाजिरी लगाया करता था आख़िर वह एक क्राइम रिपोर्टर था, जिनका महामंत्र रहा है कि वहां मौजुद रहो जहां हलचल हो। इस बार की हाज़िरी के दौरान लिखा पर नज़र पड़ते ही वह भांप गया कि सब कुछ ठीक नहीं है। ऐसा नहीं था कि इसकी उम्मीद पहले से ही नहीं थी; आख़िर डोंगरी कोई जन्नत तो थी नही। लेकिन आज लिखा खासतौर से जितना परेशान दिख रहा है उसकी क्या वजह हो सकती है?

(क्रमशः)

सौ. एस. हुसैन जैदी

Best Wishes to Crime Force Media

CHIRAGBHAI RAMESHBHAI KALARIA

Ex-MLA, 80-JAMJODHPUR LALPUR

OTHER DESIGNATIONS

DIRECTOR
A.P.M.C JAMJODHPUR SINCE 2008 to 2018

TRUSTEE
KADVA PATEL KANYA CHATRALAYA-JAMJODHPUR

TRUSTEE
SHREE NANAJIBHAI NARANBHAI SANTOKI SARVAJANIK KANYA VIDHYALAYA JAMJODHPUR

TRUSTEE
A.V.D.S. ARTS, COMMERCE & P.G.D.C.A COLLEGE JAMJODHPUR

TRUSTEE
KADVA PATEL SEVA SAMAJ-JAMJODHPUR

TRUSTEE
SANTOKBEN NANJIBHAI KALIDAS MEHTA, BALMANDIR SARVJANIK TRUST-JAMJODHPUR

TRUSTEE
EDUCATION SOCIETY - GINGANI

TRUSTEE
MANIBEN PANCHANBHAI SINOJIA MEDIUM ENGLISH SCHOOL-JAMJODHPUR

SOCIAL ACTIVITIES

- ORGANIZE BLOOD DONATION CAMPS
- HEALTH CHECK UP CAMPS
- TREES PLANTATION CAMPS

CONTACT
+91 94272 56999
CHIRAGBHAI RAMESHBHAI KALARIA
OLD CENTRAL BANK ROAD
chiragbhaikalariya.official

AMRUT

HERITAGE VILLA

3 & 4 BHK HERITAGE VILLA

Booking Contact:

98254 97917 • 97333 45333

150 Feet Ring Road,
Nr. Karnavati International School,
Railnagar, Rajkot-360005

SCOPE OF SERVICES

- Anesthesia & Pain Management
- Arthroplasty & Joint Replacement
- Cardiology
- Cardio-vascular Thoracic Surgery
- Dentistry
- Dermatology & Hair Transplant
- Emergency Medicines
- ENT
- Gastroenterology & Hepatology
- General & Laparoscopic Surgery
- Intensive & Critical Care
- Internal Medicine
- Maxillofacial Surgery
- Intervention Radiology
- Neurology & Electrophysiology
- Neuro & Spine Surgery
- Oncology, Onco. Surgery & Radio Oncology
- Orthopedics, Joint replacement & Trauma
- Pathology & Microbiology
- Plastic & Reconstructive Surgery
- Pediatric / Pediatric Neurology
- Psychiatry
- Pulmonology
- Radiology
- Urolog & Nephrology
- MRI

SUPPORTIVE SERVICES

- Administration
- Ambulance Services
- Bio - Medical
- Blood Storage
- Canteen
- CSSD
- Housekeeping & Security
- Pharmacy
- Physiotherapy

એક માનવ સેવા મંદિર

Gokul Hospital

શ્રેષ્ઠતા - સત્યતા - પારદર્શકતા

GOKUL HOSPITAL 34 YEARS IN SERVICE

VIDHYANAGAR ROAD **+91 99043 99043**

KUVADAVA ROAD **+91 88663 83108**

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE NABH ACCREDITED

RAJKOT - GUJARAT - INDIA

INVEST IN FUTURE | INVEST IN DHOLERA

INVEST ONE TIME & EARN LIFETIME

**GOLDEN OPPORTUNITY TO INVEST IN
DHOLERA'S MOST LUXURIOUS CLUB & RESORT PROPERTY**

Pooja Sapphire Club & Resorts

At Greentech Residency, Dholera Airport Road, Fedra

Project Highlights

Fully Furnished Service Apartments
20000+ SQ FT Landscaped Garden
GYM & Indoor Games Area
200+ Capacity Banquet Hall
Swimming Pool with Wooden Deck

Smart Revenue Sharing Model

Upto 11% Hassle free Return
Long term capital Appreciation
20 Nights / year Stay at Associated Property
Property Managed by Leading Chain
20% Discount on Spa & Dining

✱ **CLUB MEMBERSHIP OPEN FOR NRI'S & INDIAN ENTREPRENEURS** ✱

PROJECT BY

POOJA REALTY PVT LTD

GREENTECH Residence BUILD YOUR FUTURE

FOR MORE INFO CALL :
7433909999
7016067701
7878952255

If Undelivered, Please return to :

Raj Complex, Opp. Star Plaza,
Fulchhab Chowk,
Rajkot - 360 001.

To,